

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 18 दिसम्बर -II-2021



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. 8.50

सेवाकेन्द्र में आगमन पर मंत्री चव्हाण ने कहा...

व्यस्त जीवन शैली में भी सकारात्मक रहना सिखाता है 'राजयोग'



देगलूर-महा.। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री तथा सार्वजनिक बांधकाम मंत्री अशोकराव चव्हाण के ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेन्द्र में आगमन पर ब्र.कु. मेनका बहन तथा ब्र.कु. विद्या बहन द्वारा तिलक तथा गुलदस्ता देकर स्वागत किया गया और ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विधायक बसवराज पाटिल, नांदेड़ जिला कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष वसंतराव चव्हाण, पूर्व विधायक गंगाराम सौदागर, पूर्व सभापति शिवाजीराव देशमुख बलेगांवकर, नगर अध्यक्ष मोगलाजी शेरसेटवार, जीतेश अंतापुरकर, नगरसेवक शैलेश ऊल्लेवार, नगरसेवक नितेश पाटिल आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। ब्र.कु. मेनका बहन ने सभी को ब्रह्माकुमारीज की गतिविधियों से अवगत कराया तथा मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। मंत्री अशोकराव चव्हाण ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा दी जाने वाली राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा को व्यस्त जीवन शैली में शांत और सकारात्मक रहने का सरल माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के सामाजिक उपक्रम, व्यसन मुक्ति अभियान समाज कल्याण के लिए उपयुक्त और सराहनीय हैं। मैं स्वयं भी इस कार्य से प्रभावित हूँ।

पत्रकारों के लिए तनाव प्रबंधन संगोष्ठी

आंतरिक जगत के परिवर्तन से तनावमुक्ति

तनावमुक्ति हेतु अध्यात्म व राजयोग मेडिटेशन जरूरी : प्रो. द्विवेदी

नई दिल्ली-मंडावली। ब्रह्माकुमारीज द्वारा पत्रकारों के लिए आयोजित 'तनाव प्रबंधन' विषयक सेमिनार को सम्बोधित करते हुए भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्रालय के आईआईएमसी के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि पत्रकारों को तनाव मुक्ति के लिए अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन को जीवन में अपनाना जरूरी है। पत्रकार तनाव में रहते हैं क्योंकि कई बार वे जनता को तनाव पूर्ण खबर देने के माध्यम बनते हैं। जो हम दूसरों को देंगे वो ही हमें मिलेगा, यही कुदरत का कानून है। नेशनल पत्रकार संघ के अध्यक्ष मनोज मिश्रा ने कहा कि मीडिया में जब से ठेका प्रणाली शुरू हुई तो मीडिया की आजादी कम हुई और व्यवसाय व रोजगार में स्थायित्व न होने के कारण तथा अनिश्चितता के परिवेश में पत्रकारों के तनाव में वृद्धि हुई। ब्रह्माकुमारीज की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. पूनम बहन ने कहा कि दिव्यता और पवित्रता की ताकत सबसे बड़ी है। जहाँ यह शक्तियाँ हैं वहाँ से तनाव, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकार दूर हो जाते हैं। तनावमुक्ति होने के

लिए हमें अपने आंतरिक जगत को परिवर्तन करना होगा तभी बाह्य जगत परिवर्तित होगा। दिल्ली पत्रकार संघ के अध्यक्ष उमेश चतुर्वेदी ने कहा कि तनाव से मुक्ति के लिए ब्रह्माकुमारीज द्वारा दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा और राजयोग ध्यान कारगर है। दिल्ली पत्रकार संघ के महासचिव अमलेश राजू ने कहा कि पत्रकारों में तनाव प्रबंधन हेतु

है, साथ ही अपने जीवन और प्रोफेशन को तनाव मुक्त और बेहतर बना सकता है। कार्यक्रम आयोजक एवं ब्रह्माकुमारीज मीडिया प्रभाग की दिल्ली जोनल कोऑर्डिनेटर रजयोगिनी ब्र.कु. सुनीता बहन ने कहा कि पत्रकारों के सशक्तिकरण के ऐसे कार्यक्रम भविष्य में भी जगह-जगह पर करते रहेंगे क्योंकि मीडिया सशक्त होगा तो



अध्यात्म और राजयोग का यह कार्यक्रम सराहनीय है। ब्रह्माकुमारी संस्था के मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक एवं स्वतंत्र पत्रकार ब्र.कु. सुशांत भाई ने कहा कि आज जरूरत है सकारात्मक सोच व आशावादी मीडिया कंटेंट की, जिसके द्वारा पत्रकार न केवल जनता व समाज को सुखद और सकारात्मक दशा व दिशा प्रदान कर सकता

देश शक्तिशाली होगा। इस अवसर पर इंडियन जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव निशाना ने अपने माउण्ट आबू के अनुभव साझा करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाई जा रही नैतिक शिक्षा एवं राजयोग ध्यान की सराहना की। वरिष्ठ पत्रकार एवं दिल्ली पत्रकार संघ के पूर्व अध्यक्ष मनोहर सिंह ने आभार व्यक्त किया।

मन रूपी धरनी पर शुद्ध विचारों के बीज बोयें

विश्व खाद्य दिवस एवं राष्ट्रीय महिला किसान दिवस पर संगोष्ठी

नागपुर-वसंत नगर(महा.)। ब्रह्माकुमारीज के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा विश्व खाद्य दिवस एवं राष्ट्रीय महिला किसान दिवस पर आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी में राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई, उपाध्यक्ष कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने कहा कि मानव को खुशहाल जीवन जीने के लिए सात्विक अन्न का

पड़ता है। राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी, नेशनल कोऑर्डिनेटर, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने कहा कि शुद्ध अन्न से मन शुद्ध, वाणी शुद्ध होती है। और जहाँ शुद्ध है वहाँ शांति और सुख है। शरीर एक मंदिर है और आत्मा उस मंदिर में मूर्ति है। इसलिए शुद्धि से अन्न बनायें और सेवन करें। शरद निंबाळकर,

में एक व्यक्ति कैसर का मरीज है। अगर इस रासायनिक पद्धति को रोकेंगे नहीं तो तीन में से एक व्यक्ति कैसर का मरीज बनेगा। महेन्द्र ठाकुर, मैनेजिंग डायरेक्टर, रुची एग्रो फार्म ने कहा कि आज का समय परिवर्तन का समय है। इस बदलते समय के साथ हमें खेती करने की पद्धति भी चेंज करनी होगी। जो सभी के लिए लाभदायक हो। राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज नागपुर एवं निर्देशिका, विश्व शांति सरोवर ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, संचालिका, कामठी ने शुद्ध वातावरण बनाने के विषय में जानकारी देते हुए राजयोग का अभ्यास कराया। ब्र.कु. रेखा दीदी, संचालिका, उमरेड ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा ब्र.कु. मनीषा दीदी, सह संचालिका, ब्रह्माकुमारीज नागपुर एवं ब्र.कु. प्रेम प्रकाश भाई, व्यवस्थापक, ब्रह्माकुमारीज मराठी साहित्य विभाग, महा. ने विशेष रूप से उपस्थित रहकर अपनी शुभकामनायें दीं। संचालन ब्र.कु. अर्चना दीदी, संचालिका, मौदा ने किया।



उत्पादन और सेवन करना चाहिए। परमपिता परमात्मा जो कृषकों का कृषक है उसकी पवित्र स्मृति में मन रूपी धरनी पर शुद्ध विचारों के बीज बोने चाहिए। किसानों को नशीली चीजें खाकर, अशुद्ध, तामसिक विचारों, द्वेष-घृणा के विचारों के साथ अपने खेत में नहीं जाना चाहिए। इससे अनाज पर बुरा प्रभाव

पूर्व उपकुलपति, पंजाबराव कृषि विद्यापीठ, अकोला ने कहा कि किसान लोभ वश ज्यादा उत्पादन के लिए खेती में रासायनिक खाद डालता है। अनाज पर कीटनाशक दवाइयाँ छिड़कता है। ऐसा अनाज खाने से मनुष्यों को बहुत बीमारियाँ हो रही हैं। डब्ल्यू.एच.ओ. के अनुसार आज हर पाँच व्यक्ति के समूह

'निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर' में ब्र.कु. वसुधा ने कहा...

दुआओं से ही प्राप्त होती आंतरिक खुशी



कादमा-हरियाणा। निःस्वार्थ सेवा से ही दुआएं मिलती हैं जिससे हमें आंतरिक खुशी प्राप्त होती है जो हमारे जीवन में आने वाले विभिन्न व्यक्ति व सामाजिक समस्याओं के समाधान में मदद करती है। यह उद्गार ब्रह्माकुमारीज के झोझूकलां सेवाकेन्द्र द्वारा सेठ किशनलाल वाले मंदिर में चिकित्सकों द्वारा आयोजित आँखों के 'निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर' के उद्घाटन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आँखें प्रभु की अनमोल उपहार हैं। जिस तरह से हम अपनी आँखों की देखभाल करते हैं, ठीक इसी प्रकार सूक्ष्मता से अपने

विचारों की, संकल्पों की जाँच करनी चाहिए क्योंकि व्यक्ति के सकारात्मक विचार ही उसे महान बनाते हैं। इस अवसर पर डॉ. हरिओम निगम ने लोगों की आँखों की जाँच करते हुए उन्हें धूल मिट्टी से बचाने तथा उनकी संभाल करने को कहा। साथ-साथ उन्होंने सभी को अन्य टिप्स देते हुए निःशुल्क दवाइयाँ भी दीं। इस अवसर पर डॉ. हरिओम निगम, पवन कुमार, राजकुमार आदि की टीम का विशेष सहयोग रहा। इस मौके पर झोझूकलां सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन ने कहा कि नकारात्मकता से भी अपनी आँखों का बचाव आवश्यक है, तभी हम समाज को दिव्य दृष्टि से देख सकते हैं।

भाव और भावना की सूक्ष्मता को समझें

कहते हैं 'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी' हमारे भाव जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं। भाव हमारे भाग्य का निर्माण करता है। बिना भाव के जीवन ही नहीं। तो आज हम अपने जीवन में भाव और भावना की सूक्ष्मता को समझने का प्रयास करते हैं। भाव जीवन धुरी का महत्वपूर्ण आधार है। भाव से जुड़े शब्द हम हर पहलू पर उपयोग करते हैं। मेरा कहने का 'भाव' ये था, ये नहीं, मेरा भाव आपके प्रति सदा स्नेह का हो, प्रेम-भाव सदा रखना, हमारे बीच में प्रेम भाव बना रहे। देखो, हर वक्त हम इस भाव को केन्द्र में रख व्यवहार करते हैं। सम्पर्क में आते हैं, बिना भाव के सम्बंध नहीं हो सकते। सबसे उत्तम 'भाव' है आत्मिक भाव। आत्मिक भाव-वास्तविकता से जुड़ा हुआ है। मनुष्य-मनुष्य के बीच का रिश्ता 'आत्म-भाव' का होना चाहिए। देह भाव से परे होने से ही 'आत्मिक भाव' का निर्माण होता है। आत्मिक भाव का आधार सत्यता, निःस्वार्थता पर है। उसी के नाते से हम एकता के सूत्र को मजबूत कर सकते हैं। हमारा जैसा भाव हम रखते हैं वैसा ही व्यवहार हमारा होता



डॉ. कु. गंगाधर

है। शब्द भले कभी ऊपर-नीचे हो जायें किन्तु भाव शुद्ध है, पवित्र है तो सामने वाले को चुभता नहीं है, क्योंकि हमारी आत्मिक ऊर्जा वास्तविक है, टुथ है, सत्य है। इसलिए किसी को खराब नहीं लगता।

भाव हमारे किए हुए कर्म के आधार से निर्माण होता है। हमारा पास्ट में किया हुआ कर्म, सम्बंध, सम्पर्क जैसा भी रहा है, उसी की ऊर्जा के रूप में भाव बनता है। यानी कि हमारी नियती का निर्माण होता है। जैसी नियती वैसी ही मन के भाव की ऊर्जा होती है, शक्ति होती है। इस तरह से देखें तो भाव हमारे पूर्व के किये सोच व कर्म का संचयन है। कलेक्टिव फोर्स है। तब ही तो परमात्मा कहते हैं, हमेशा हरेक के प्रति आत्मिक भाव रखें। ताकि आपके व्यवहार में आने वाले कर्म श्रेष्ठ व शुद्ध बनें। इसका मतलब यही है कि शुद्ध, पवित्र ऊर्जा वाले 'भाव' निर्मित होते हैं, नियती शुद्ध बनती है।

दूसरी तरफ 'भावना'। भावना हमारे पयूचर का निर्माण करती है, जबकि भाव हमारे पास्ट का पोस्टमार्टम करते हैं। यानी कि हम कह सकते हैं कि हिसाब-किताब चुकतू होता है। लेन-देन नैचुरल बनाने की तकनीक का नाम है - 'भाव'। जबकि 'भावना' हमारे भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कहते हैं ना, शुभ सोचो, शुभ भाव रखो। ऐसा क्यों कहते हैं? क्योंकि शुभ-भाव रखना माना अच्छे भविष्य के बीज बोना। भविष्य में मलाईदार फसल प्राप्त करना।

चाहे आपके पास कुछ भी न हो लेकिन सदा स्वयं या दूसरों के प्रति शुभ-भावना रखते हैं तो आप श्रेष्ठ भविष्य का निर्माण करते हैं। कहते हैं ना, भगवान भी शुभ भावना का भूखा है। श्रेष्ठ भावना आपके उच्च तकदीर का निर्माण करती है। श्रेष्ठ भाव-भावना से भगवान को भी अपना बना सकते हैं। तब तो कहते हैं शुद्ध रहो, शुभ सोचो, श्रेष्ठ पाओ।

संसार के खेल का केन्द्र ही भाव और भावना पर आधारित है। किस नजरिये से हम हर घटना को देखते हैं, उसके बारे में किस भाव से सोचते हैं, वो ही सुख-दुःख का आधार बनता है। परमात्मा का निर्देश ही है हरेक के प्रति शुद्ध-आत्मिक भाव में रहो और श्रेष्ठ भावना रखो। इस तरह भाव और भावना के बैलेंस से भगवान की ब्लेसिंग के पात्र बनते हैं।

बहुतकाल का अभ्यास ही अन्त में काम आयेगा



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ज्वालामुखी है। टूटने-जोड़ने में ताकत कम हो जाती माना मास्टर है इसलिए मुझ आत्मा का परमात्मा से सर्वशक्तिकान की लिंक सदैव जुटा रहे। लिंक टूटा तो शक्ति अर्थोर्टी में रहना। न रूह्रूहान, न मनन, न सोल कॉन्सेस की स्मृति बार-बार हो, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन उस स्वरूप में ऑलमाइटी अर्थोर्टी के सर्वशक्तियों का बीजरूप हो करके लाइट हाउस बन करके रहना। जब आप लाइट हाउस बनेंगे तो उसमें यह विचार नहीं चलेंगे कि मैं लाइट हूँ, मैं लाइट दे रहा हूँ, नहीं, लाइट हाउस का काम ही है लाइट देना। ज्वालामुखी का अर्थ है - एकदम लाइट हाउस, माइट हाउस... मेरे में लाइट भी है, माइट भी है, सर्वशक्तियां भी हैं। वो अर्थोर्टी वाली स्टेज और उसमें स्थित होने से ऑटोमेटिकली विश्व की आत्माओं के प्रति वो लाइट और माइट जाती रहेगी। सर्वशक्तियों की लाइट-माइट जो है, उसी स्थिति में स्वरूप बन जायें, उस सीट पर सेट हो जायें तो ज्वालामुखी स्थिति हो जायेगी। बाकी सब जो भी याद करने के तरीके हैं वो भी याद की ही स्टेजस हैं, लेकिन वो पॉवरफुल है ज्वालामुखी की स्टेज, जिसमें बाबा कहते हैं संस्कारों का भी संस्कार कर सकते हैं।

तो ज्वालामुखी स्थिति तब आपकी हो सकती है जब बार-बार आप चेक करो, इस लाइट-माइट हाउस के स्वरूप की स्मृति में हूँ? अपना लिंक चेक करते रहो, अगर बार-बार लिंक टूटता रहेगा तो फिर कितना भी आप जोड़ लो लेकिन गिरी हुई चीज में ताकत कम हो जाती है। जैसे रस्सी मानो टूट गई उसको हम जोड़ लेते हैं लेकिन उसकी ताकत तो कम हो जाती

है। टूटने-जोड़ने में ताकत कम हो जाती है इसलिए मुझ आत्मा का परमात्मा से लिंक सदैव जुटा रहे। लिंक टूटा तो शक्ति कैसे आयेगी? शक्ति नहीं मिलेगी तो निर्बल हो जायेंगे फिर माया का वार होता रहेगा। इसलिए बाबा ने अटेन्शन खिंचवाया कि लिंक को चेक करो। दूसरा अपनी लीकेज को भी चेक करो, लीकेज है वेस्ट थॉट और वेस्ट टाइम। चलो वेस्ट नहीं किया लेकिन बेस्ट कितना किया? बीच-बीच में लीकेज होता रहा तो खाली हो जायेंगे इसलिए एक लीकेज चेक करो, दूसरा लिंक जोड़ो। तो ज्वालामुखी बनने के लिए ये दोनों बातें चेक करते रहो। अगर दोनों ही बातें ठीक हैं तो फिर ज्वालामुखी स्थिति में स्थित हो सकेंगे।

जो भी करना है वो बहुतकाल का अभ्यास करो क्योंकि यह बहुतकाल का अभ्यास ही अन्त में काम आयेगा। सभी चाहते हैं हम 8 घंटा याद में रहें लेकिन बीच-बीच में किसी न किसी रूप में रूकावटें आती हैं। कोई चाहते नहीं हैं फिर भी ऐसा क्यों होता है? क्योंकि बहुतकाल की विस्मृति का संस्कार खींचता है। 63 जन्म विस्मृति के संस्कार रहे हैं ना। बहुतकाल अगर स्मृति में रहने का अभ्यास नहीं होगा, तो पास कैसे होंगे? अन्त मते सो गति क्या होगी? बहुतकाल का अभ्यास बहुत जरूरी है। बहुतकाल को अण्डरलाइन करो तो तीव्र पुरुषार्थ होगा, बल मिलेगा। डायरेक्शन अनुसार चेकिंग के साथ चेंजिंग भी होती रहे, तो आत्मा चार्ज होती रहेगी, चियरफुल रहेंगे। बाबा की श्रीमत पर पूरा फॉलो करते रहो।

अतीन्द्रिय सुख में रहना है तो सदा खुशी की बातें स्मृति में रखो

अतीन्द्रिय सुख



राजयोगिनी दादी जानकी जी

नुमाशाम का टाइम योग में बैठने का टाइम है परन्तु अभी साइलेंस में बैठे साइलेंस की ही बातें करेंगे। जब बाबा शब्द कहते हैं तो क्या याद आता है? बाबा का प्यार, दृष्टि। बाबा की दृष्टि से प्यार का अनुभव होता है। बाबा के बोल से समझ मिल जाती है तो बुद्धि खुल जाती है।

बाबा से क्या मिला है? पालना, पढ़ाई और प्राप्ति। वो हमारा न सिर्फ बाबा है, पर मात-पिता, पालनहार है इसलिए बाबा बच्चों को कहते हैं कि तुम सिर्फ बेफिक्र रहना सीखो। बच्चा माना बेफिक्र। बाबा शिक्षा भी तो बेफिक्र रहने के लिए दे रहा है क्योंकि बच्चे को कोई फिक्र होता है तो वो पढ़ाई अच्छी रीति नहीं पढ़ सकते हैं। बाबा का बच्चा बनने से ही स्टूडेंट लाइफ हो गई।

शिवबाबा ने आते ही रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा, अब यज्ञ सम्भालेगा कौन? ब्रह्मा बाबा से समर्पण कराया तो वास्तव में ब्रह्मा जयन्ती भी हो गई, तो हम ब्राह्मणों की जयन्ती भी हो गई। तो पहले किसकी जयन्ती? तो हम पहले बाबा की जयन्ती मना रहे हैं। बाबा हमारी मना रहे हैं। सारे कल्प में परमात्मा को बाबा कहने वाले हम बच्चे ही हैं। जब हम देवता होंगे तो क्या करेंगे? इतना दूर देश का रहने वाला बाबा खास हमारे लिए भारत में आया, हमारे लिए यज्ञ रचा, यज्ञ से हम बच्चों की पालना हुई। यज्ञ सेवा करके हम ब्राह्मण बन गये। अगर हम ब्रह्मा मुख से ज्ञान सुनके ब्राह्मण नहीं बनते, तो यज्ञ सेवा नहीं कर सकते। जिसके मन में युद्ध चलती है तो उसकी सेवा में दिल नहीं लगती और जिसको चिंता, ममता रहती है उनकी दिल भी सेवा में नहीं लगती। कोई कुछ भी किसी तरह की भी यज्ञ सेवा न करे सिर्फ यज्ञ से खाता रहे, उसको यज्ञ के ब्रह्माभोजन की ताकत नहीं मिलती है। ब्राह्मण और सेवा न करे, तो वास्तव में वो लाइफ ही नहीं है। सारे कल्प में ब्राह्मण लाइफ बहुत श्रेष्ठ लाइफ है।

जो अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं उनके पास दुःख का नाम निशान भी नहीं रहेगा। संगमयुग है, बाबा के बच्चे हैं, ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण हैं, स्वदर्शन चक्रधारी हैं, कल्प पहले वाले हैं, थे, हैं और होंगे। ऐसी ऐसी खुशी की बातों को स्मृति में रखेंगे तो अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे।

विजय माला में आना है तो अपना पेपर आपेही लो



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हरेक अपने आप से पूछो कि हम कौन हैं? हम गॉडली स्टूडेंट हैं? हम राजयोगी हैं? हम विश्व सेवाधारी, वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं? हम सो ब्राह्मण सो पूज्य देवता हैं? हम फालो फादर करने वाले हैं? हम बेहद के त्यागी, सन्यासी हैं? हम राजर्षि, तपस्वी हैं? तो हमारी ड्यूटी क्या है अथवा हमारी जिम्मेवारी क्या है? स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना। इस समय बाबा का हमारे लिए क्या इशारा है? और हमारे पढ़ाई का अन्तिम पेपर क्या है? विद ऑनर्स पास होना और कर्मातीत बनना। हमारे पेपर की रिजल्ट है विजय माला के विजयी रत्न बनना। फिर भी आता है- हम कौन हैं? हम हैं परमपिता परमात्मा की डायरेक्ट सन्तान। हमारा परिवार क्या है? भाई-भाई या बहन-भाई यह सारा हमारा ईश्वरीय परिवार है।

तो इस तरह से हमारे पढ़ाई की क्या-क्या सब्जेक्ट्स हैं, उन सब सब्जेक्ट्स को चेक करो कि हमारी बुद्धि में ज्ञान की सब प्वाइंट्स बराबर

धारण हैं जो कोई भी टाइम कोई भी बात का हम ज्ञान युक्त जवाब दे सकें? 2. हमारे योग की स्टेज क्या है? 3. हमारे पास सब शक्तियों की रिजल्ट क्या है? 4. हमारे में वैल्यूज कितनी हैं? और बाकी हमारे में कमजोरी किस चीज की है? 5. हम नष्टोमोहा कहाँ तक बने हैं? 6. हम मायाजीत, जगतजीत, विजयी रत्न कहाँ तक बने हैं? 7. हमारा ड्रामा पर और खुद पर फेथ कहाँ तक है? ऐसे अनेक सवाल हम अपने आपसे पूछ सकते हैं और उसी से अपना चार्ट चेक कर सकते हैं। जैसे पेपर होता है वैसे हरेक बात का खुद ही खुद से क्वेश्चन निकाल उनका जवाब लिखो। तो अपने चार्ट का खुद ही जवाब आयेगा।

फिर देखो कि हम ऑलराउण्ड नम्बरवन हैं या नम्बर टू हैं? अगर अभी हमारा पेपर हो तो हम कहाँ तक उन सबमें पास हो सकते हैं! समझो निर्भयता का पेपर आता है तो हम निर्भय हैं या डरपोक हैं? ऐसा ही फिर कोई देह अभिमान का पेपर आता है तो हम देही अभिमानी रह सकते हैं या नहीं? क्योंकि देह अभिमान हमें

नीचे ले आयेगा। तो ऐसा कोई समय आता जो सत्यता का जवाब देना पड़ता है परन्तु डर के कारण सत्य नहीं बोल सकते हैं, झूठ बोल देते हैं। तो कारण है डरना या कारण हुआ देह अभिमान। बाबा ने कहा है - अब मुक्ति वर्ष मनाओ तो मुक्ति के लिए हमें इन सभी पेपर्स में पास होना है तब मुक्ति मिलेगी। तो यह है खुद ही खुद से मेहनत करना, चेक करना और विजयी बनना। प्यूरिटी की सब्जेक्ट में मन्सा अर्थात् दृष्टि, वृत्ति और फिर वाचा, सम्पर्क-सम्बन्ध, संकल्प-विकल्प यह सब कहाँ तक यथार्थ हैं? इसमें पहले अपने आपको मार्क्स दो। वाचा और कर्मणा इन सबमें हम कहाँ तक फुल मार्क्स ले सकते हैं? और स्वयं ही साक्षी हो देखो कि हम कहाँ तक उसमें विजयी हैं? ऐसे अनेक प्वाइंट्स हैं।

जैसे ड्रामा पर हम सदा ही अडोल रहते हैं? जो होता सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा... जिससे हमारी स्थिति हर परिस्थिति में अडोल रहती है? दूसरों को भी देखते तो लगता इसका भी ड्रामा में यह पार्ट

है, खेल है। उन सब खेलों को देख खिलाड़ी बन हम साक्षी स्थिति में कहाँ तक रहते हैं? या मुझे नफरत, घृणा होती है या रहम, दया की भावना रहती है? कहते तो हैं शुभ भावना, सद्भावना, तो ऐसी भावना है? जिसको दूसरे शब्दों में कहते हैं शुभ दुआयें हैं? शुभ भावना माना ही शुभ दुआयें। ऐसी कई प्वाइंट्स अपने आप में मनन करो और अपने आपको चेक करके अपना पेपर तैयार करो। फिर चेक करो कि विजयी माला की क्या विशेषतायें हैं और उन विशेषताओं को हमने कहाँ तक जीवन में लाया है।

यदि हमारी अवस्था अच्छी है तो दूसरे को तीर सहज लग सकता है। हमारी अवस्था का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। जैसे दूध कितना स्वच्छ होता है, उसमें ज़रा-सा भी दही या नींबू का एक बूंद भी अगर डालो तो दूध फट जायेगा। तो वास्तव में हम आत्मायें भी इतनी ही स्वच्छ हैं, उसमें थोड़ा भी कोई दोष होता तो उसका असर अच्छी स्थिति पर फौरन पड़ता है इसलिए हम बहुत-बहुत स्वच्छ आत्मा हैं। हम दूध से भी प्योर हैं। हमें किसी के संग के दोष में आना तो दूसरी बात है परन्तु संग का रंग टच भी नहीं हो। इसकी सबको बहुत सम्भाल रखनी है।





वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी के सेवा समर्पण की स्वर्ण जयंती देव दिवाली के अवसर पर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर केक काटते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, डॉ. विजय शाह, उद्योगपति राजन शाह, मंगलवाड़ी उप क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. राज दीदी, कारेलीबाग सेवाकेन्द्र संचालक डॉ. जयंत भाई, वाघोडिया सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तर्लिका बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा बहन, सह संचालिका ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य।



स्कॉटलैंड-यू.के। ग्लासगो में आयोजित क्लाइमेट टॉक्स-सीओपी 26 के दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, एडिशनल चीफ ऑफ ब्रह्माकुमारीज एंड रीप्रेजेंटेटिव ऑफ द ब्रह्माकुमारीज एट द युनाइटेड नेशन्स ने सम्बोधित किया। जॉर्ज स्क्वायर पर इंटरफेथ प्रेयर व मेडिटेशन विजिल तथा स्कॉटिश इंटरफेथ वीक के उद्घाटन अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने विश्व के क्रिटिकल सिचुएशन पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही ब्रह्माकुमारीज एवं लुथरन वर्ल्ड फेडरेशन द्वारा गार्नेट हिल सिनेगॉग में 'इंटरफेथ गैदरिंग इन स्पीरिट ऑफ तलानोआ डायलॉग' का आयोजन हुआ जिसमें ब्र.कु. जयंती दीदी ने प्लैनेट के प्रति शुभ और शुद्ध भावना रखते हुए कर्म करने के लिए प्रेरित किया। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान बड़ी संख्या में फेथ लीडर्स, पॉलिटीशियंस, नेगोशिएटर्स तथा अन्य लोग शामिल हुए एवं सभी ने अपने-अपने विचार रखे।

योगाभ्यासी के लिए ध्यान देने योग्य बातें



काम करे तब वह योगी कैसा?

यहाँ खून-जेल-हथकड़ी का सामान्य अर्थ नहीं है। यदि कोई दूसरे से ऐसे कटु शब्द बोलता है कि वे तलवार की तरह उसके मन को घायल करते हैं तो गोया वह खून ही करता है। यदि वह निकृष्ट कर्मों द्वारा कर्म-बंधन में स्वयं को जकड़ता है तो गोया वह हथकड़ी लगवाने का ही काम करता है। यदि वह दूसरों को दुःख देता है और स्वयं भी दुःखी होता है तो गोया वह जेल में ही तो है। परंतु चूंकि योगाभ्यासी आत्मा भी द्वापर युग से मनोविकारों में अधिकाधिक ग्रसित होते-होते उनके रंग में रंग गयी होती है, अतः अपनी 'पुरानी आदत' या संस्कारों के वशीभूत हो कर वह कुछ-न-कुछ ऐसे कर्म कुछ काल तक करती है जो महानता की कोटि के न होकर मध्यम श्रेणी के होते हैं। हो सकता है कि योगाभ्यासी को प्रारंभ में जिह्वा के रस से पूर्णतः उपराम होने में कठिनाई हो या किसी सुंदर देह के प्रति उसके नेत्र आकर्षित होते हों अथवा दुर्यवहार करने वाले किसी व्यक्ति के प्रति उनके मन में कुछ जोश पैदा होता हो या अभिमान की आदत के कारण वह कभी-कभी रोब डालता हो। परंतु उसका

पूरा पुरुषार्थ तो इन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए ही होना चाहिए और दिनोदिन उसके पुराने संस्कारों का वेग तो कम ही होना चाहिए। उसमें ऐसी जागृति तो आ ही जानी चाहिए कि वह किसी को भी दुःख न दे, वो मानवता के नीचे के दर्जे का व्यवहार न करे, उससे जो छोटे हों, आयु में अनुज और पद में कनिष्ठ हों, उनसे भी वो दुर्यवहार न करे।

इसके विपरीत यदि वह अपने स्थान, अधिकार, प्रतिष्ठा इत्यादि के आधार पर किसी से बदला लेता है, किसी को नीचा दिखाता है, किसी अनाधिकारी को तो तख्त पर बिठा देता है और किसी योग्य को अपनी घृणा के कारण तख्ते पर चढ़ा देता है, किसी को डांट-डपट कर उसका जीना ही मुश्किल कर देता है या 'सेवा' का नाम लेकर यश बटोरने के लिए दूसरों को उससे वंचित करता है, तब उसे 'योगी' कैसे कहा जायेगा? हाँ, वह कुछ समय मन को योगयुक्त करने का अभ्यास करता होगा परंतु उससे अधिक तो वह विकर्मों ही का संचय करने में लगा रहता है। अतः वह तो भुक्त-भोगी भी है।

ऐसे व्यक्ति के बारे में तो यह कहना उचित होगा कि उसने स्वार्थ और लोभ



ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

छोड़ा नहीं है बल्कि अब वह नए प्रकार का लोभ पहले से भी अधिक करने लगता है। उसकी कामनायें बढ़ी ही हैं। उसके ईर्ष्या-द्वेष भी मरे नहीं हैं बल्कि उनका केवल रूप बदला है। किसी-किसी के बारे में तो यह कहना भी उचित ही होगा कि उसकी तृष्णाओं में वृद्धि हुई है और उसके मनोविकार बलवान हो गये हैं।

अतः योगाभ्यासी को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि वह नये रूप में नून-तेल-लकड़ी को इकट्ठा करने में न लग जाये बल्कि उसने जिस लक्ष्य को अपनाया है, उस ही की ओर बढ़ता चले। वह नये प्रकार की मोह-माया से मलीन होने की बजाय प्रभु-स्मृति में लवलीन हो जाये।

जब कोई व्यक्ति योगाभ्यास करने लगता है, तब तो योगी के लिए अपनी कुछ मर्यादायें होती हैं, उसकी साधना के लिए अपनी प्रकार की एक आचार-संहिता और व्यवहार-संहिता होती है। योगी को उच्च लक्ष्य की ओर बढ़ना होता है और उच्च मर्यादाओं का पालन करना होता है। एक साधारण एवं संसारी व्यक्ति की

तुलना में तो योगी से श्रेष्ठ कर्मों की अपेक्षा की जाती है। भोगी को तो नून-तेल-लकड़ी ही याद रहती है परंतु योगी तो जीवन-निर्वाह के साधनों को अर्जित करने के साथ प्रभु-स्मृति में लवलीन रहने का पुरुषार्थ करता है। यदि वह भी नून-तेल-लकड़ी ही को याद करता रहे और उसके लिए खून-जेल-हथकड़ी वाले



इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के अनंत विभूषित महामंडलेश्वर श्री राम दयाल जी महाराज, पप्पू राम जी महाराज व अन्य संत गणों को दीपावली पर्व की बधाई देने व माउंट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. नारायण भाई व ब्र.कु. दीपाली बहन।



जालंधर-ग्रीन पार्क(पंजाब)। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ज्वाइंट कमिश्नर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन जालंधर मेजर अमित सरिन, राकेश कुन्ध्रा, राजेश कोचर, ब्र.कु. रामदयाल कश्यप, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन तथा अन्य।



आगरा-नवपुरा(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा ग्राम बुढ़ेरा में राष्ट्रीय महिला किसान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में ग्राम प्रधान जी की धर्मपत्नी श्रीमति शकुंतला देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु बहन तथा ब्र.कु. शालू बहन, टूडला। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।



भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। दीपावली के अवसर पर चैतन्य देवी लक्ष्मी की झाँकी में उपस्थित हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



जम्मू। नरेन्द्र सिंह जम्वाल, चेयरमैन, जे.एम.सी. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन बहन।



राजकोट-रणछोड़नगर(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा पुलिस स्टेशन में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पी.ए.आई. भरत कटारिया, अन्य पुलिसकर्मी, ब्र.कु. शीतल बहन तथा अन्य।



रायपुर-छ.ग.। भाई दूज के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को आत्म स्मृति का तिलक लगाने के पश्चात् प्रसाद देते हुए क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता दीदी।



कोटा-वल्लभ नगर(राज.)। दीपावली के शुभ अवसर पर लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को दीपावली का रहस्य बताने एवं उनके हाथों से दीप जगाने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।



नवरंगपुर-ओडिशा। दीपावली के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुन्ना खान, राज्य सभा सांसद, रत्नाकर साहू, प्रोजेक्ट डायरेक्टर, ब्र.कु. नीलम बहन तथा ऑनलाइन व ऑफलाइन बड़ी संख्या में भाई-बहनें शरीक हुए।



अदूर-केरल। केरल लेजिस्लेटिव एसेम्बली के डिप्टी स्पीकर चित्तायम गोपाकुमार के साथ ईश्वरीय चर्चा करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. उषा बहन तथा अन्य।



आगरा-शमसाबाद(उ.प्र.)। दीपावली महोत्सव मेले में आध्यात्मिक चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए नगर अध्यक्षा श्रीमति लक्ष्मी देवी राठौर, ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी तथा अन्य।



धार-म.प्र.। ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् उपस्थित हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सत्या बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

मनसा सेवा द्वारा साकाश देने की विधि



ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गलाक से आगे

हमने पिछले अंक में पढ़ा, जाना कि मनसा सेवा द्वारा साकाश देने की विधि में दूसरे प्रकार की सेवा कौन-सी है तो अब है तीसरे प्रकार की सेवा...

तीसरा है स्थिति द्वारा सेवा। और स्थिति कैसे बनेगी, उसका कनेक्शन किसके साथ है? जैसे संकल्पों का कनेक्शन भावनाओं के साथ है। दृष्टि का कनेक्शन वृत्ति के साथ है। ऐसे ही स्थिति का कनेक्शन स्मृति के साथ है। जैसी स्मृति वैसी स्थिति। तो हमारी स्मृति के अन्दर क्या चीज है। कौन-सी स्मृति आ रही है। बाबा इसीलिए हमेशा कहते हैं कि स्मृति स्वरूप बनो। क्योंकि जितना हम स्मृति स्वरूप होते हैं उतना स्मर्थ स्वरूप बनते जायेंगे। स्वरूप और

स्थिति जितनी हमारी ऊंची है उतना बहुत दूर तक वो सेवा करेगी। वो साकाश देने का काम करेगी। स्वरूप और स्थिति ये अंतिम समय लोगों को साक्षात्कार करायेगी। स्वरूप का भी साक्षात्कार होगा, हमारी स्थिति के कारण। तो इसीलिए बाबा कहते हैं हजारों मील दूर बैठे भी लोगों को आपका साक्षात्कार होगा।

वृत्ति द्वारा वायब्रेशन जो हैं वो वायुमंडल, वो वहाँ की आत्माओं की सेवा करेगी, शुद्ध संकल्प-शुद्ध भावना वो थोड़ी दूरी माना दूसरे शहर, तीसरे शहर में करेगी। लेकिन जो स्थिति और स्वरूप द्वारा साक्षात्कार होगा वो सात समंदर पार होगा। उसको भी अनुभव होगा। जैसे कई विदेशी

स्थिति पॉवरफुल तब होगी जब पहला स्टेप संकल्प, भावनायें शुद्ध होंगी, दृष्टि-वृत्ति शुद्ध होगी, उतनी ही हमारी स्थिति ऊंची होती जायेगी...

भाई-बहनें आते हैं ना तो उनको दादी जानकी का साक्षात्कार होता था। कहते हैं कि ये बुजुर्ग महिला हमें दिखाई दी थी। सपने में आई थी। तो इसीलिए कहा जैसे व्यक्ति की स्मृति होगी और जितना हमारा

स्मृति स्वरूप होगा तो स्मर्थ स्वरूप और वो स्मर्थ स्वरूप ही अनेकों को अनुभव करायेगा। दूर-दूर तक भी लोग होंगे, उसको भी फील होगा कि कोई ऐसा पैगम्बर आया है, कोई ऐसा मैसेंजर आया है जिसने मुझे ये मैसेज दिया।

तो आपकी स्थिति जैसे होगी वो मैसेज देने का कार्य करेगा। इसीलिए सूक्ष्म जो वायब्रेशन हैं वो दूर-दूर तक पहुँचते हैं अपनी स्थिति के द्वारा। तो स्थिति कितनी पॉवरफुल होनी चाहिए? और स्थिति पॉवरफुल तब होगी जब पहला स्टेप संकल्प, भावनायें शुद्ध होंगी, दृष्टि-वृत्ति शुद्ध होगी, उतनी ही हमारी स्थिति ऊंची होती जायेगी और स्थिति ऊंची तो स्वरूप ऐसा होगा जो दूर-दूर तक लोगों को वो साक्षात्कार करायेगा। कोई सफेद वेषधारी आया था। जिसने मुझे कहा फलानी जगह जाओ और मैं बाबा के घर तक पहुँचा। अंत में आपके सामने लोग आयेगे और कहेंगे आप ही आये थे। और मैं इतनी दूर से आई।

तो इसीलिए कहने का भावार्थ मेरा ये है कि जो सूक्ष्म साकाश देने की विधि जो है वो ये शुभ भावना-शुभ कामना द्वारा, वृत्ति द्वारा वायुमंडल और स्थिति द्वारा तीन प्रकार से है।



जयपुर-सोडाला(राज.)। दीपावली महोत्सव के दौरान रेखा राठौड़, जयपुर डिस्ट्रिक्ट सेक्रेटरी एंड काउंसिलर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम दीदी, जयपुर राजा पार्क उप क्षेत्रीय संचालिका। साथ हैं शशि शर्मा, बॉलीवुड एक्ट्रेस एंड प्रॉड्यूसर तथा ब्रह्माकुमारी बहन।



सीतापुर-उ.प्र.। ग्राम समाज की सेवा हेतु आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में समझाने के पश्चात् ग्राम प्रधान गुड्डू भार्गव को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी बहन।



नवसारी-मरोली(गुज.)। कस्तूरबा आश्रम(छात्रालय) में ब्रह्माकुमारीज को मोटिवेशनल स्पीच के लिए आमंत्रित किये जाने पर विद्यार्थियों के समक्ष अपने प्रेरणादायी वक्तव्य रखते हुए ब्र.कु. मुकेश बहन। मौके पर आश्रम की सुश्री जिज्ञासा चौधरी, आश्रम के मैनेजर प्रताप भाई तथा ब्र.कु. बाबू भाई पटेल उपस्थित रहे।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेयबल टू शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO:- 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya
Vishwa Vidhyalya, Shantivan
Note:- After Transfer send detail on E-Mail -omshanti-
media.acct@bkivv.org or
Whatsapp, Telegram No:- 9414172087



स्वयं में छिपा है समस्या का समाधान



हमारी हार्टबीट का ग्राफ देखें तो रेखा हमेशा ऊपर-नीचे दिखाई देगी। अगर ग्राफ प्लेट में हमारी हार्टबीट की रेखा सीधी हो जाये तो जीवन समाप्त। ठीक उसी तरह हमारे जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता जीवन का हिस्सा है। कभी हमारा सुख-शांति में पल बितता है, तो कभी दुःख-अशांति या प्रतिकूलता में। इस तरह से होना ही जिंदगी है ऐसा हम कह सकते हैं। हमें जीवन में कठिनाईयां या समस्याएं क्या आती हैं उस पर थोड़ा विचार करेंगे।

हमारा जीवन कम्प्यूटर में की गई प्रोग्रामिंग की तरह है। कम्प्यूटर में जैसी प्रोग्रामिंग करेंगे वैसी ही वो स्क्रीन पर दिखायेगा। अगर प्रोग्रामिंग ठीक नहीं होगी तो हैंग भी हो जाता है। ठीक उसी तरह हमारे जीवन में जो प्रोग्राम भरा है वही जीवन की स्क्रीन पर आता है। वह चाहे निगेटिव हो या फिर पॉजिटिव। अगर उसमें हमने ही समस्या की प्रोग्रामिंग भरी होगी तो समस्या के रूप में जीवन में सामने आयेगी। अगर खुशी

के गीत भरे होंगे तो हमारा जीवन खुशमिजाज दिखाई पड़ेगा। जैसे हम जीते हैं वैसे ही हमारे अवचेतन मन में रिकॉर्ड हो जाता है। और वही रिकॉर्डिंग हमारे जीवन में बजती है। हम जानते हैं कि हमारा अवचेतन मन कैसे कार्य करता है और उसे हम प्रभावित कर परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं।

आपका अवचेतन मन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दिशाओं में काम करता है। यह अच्छे और बुरे में फर्क नहीं करता। वह उन विचारों को पोषित करता है जो हम उसमें डालते हैं। चाहे फिर वो पॉजिटिव हो या फिर निगेटिव। उसमें ये समझ नहीं होती कि ये सही है, ये गलत है। आप उसमें नकारात्मक विचार डालेंगे तो यह असफलता, तनाव और दुःख आपको देगा। अगर इसे अच्छे सकारात्मक विचार देंगे तो खुशी, सफलता और समृद्धि देगा। अवचेतन मन चीजें देखता है। वह इमेज की भाषा को जानता है। जैसे ही देखता है उन्हें

दर्ज कर लेता है। और फिर जब इनकी जरूरत होती है तो उन्हें याद कर इस्तेमाल कर लेता है। जो बात आप अपने बौद्धिक स्तर पर स्वीकार करते हैं, मानते हैं वो आपके अवचेतन मन में भी स्वीकार्य होती है। इसलिए हमें अपने साथ होने वाली नकारात्मक घटनाओं और बातों पर ज्यादा चकित नहीं होना चाहिए, क्योंकि इन बातों को हमने ही अपने अवचेतन मन में डाला है। हालांकि आप अवचेतन को प्रशिक्षित कर सकते हैं। आपकी सभी समस्याओं का समाधान अवचेतन मन के पास उपलब्ध है। अगर कोई समस्या है तो अपने अवचेतन मन से बात कीजिए। उसके सामने एक सवाल रख दीजिए।

हो सकता है उस सवाल का जवाब तुरंत न मिले। लेकिन अवचेतन लगातार जवाब तलाशता रहता है। भले ही हम कोई और काम कर रहे हैं। फिर एक दिन वह एक व्यावहारिक समाधान लेकर आ जाता है। अवचेतन में असीम शक्ति है। अगर हम सुख-शांति व सकारात्मक हल चाहते हैं तो हमें उसमें अपने अनुकूल प्रोग्रामिंग करनी होगी।

अच्छी प्रोग्रामिंग कैसे और कब कर सकते हैं? हम जानते हैं कि कोई भी कार्य मन स्थिर हो, मन में उमंग हो तब किया जाये तो उसका परिणाम भी वैसा ही होगा।

मनुष्य का मन शांत-चुस्त-दुरुस्त कब होता है? सुबह के समय होता है ना! जब दुनियावी कार्य के प्रभाव से मुक्त होते हैं, हल्के होते हैं। तब अगर सकारात्मक प्रोग्रामिंग कर दी जाये तो वो हमारे बौद्धिक स्तर पर स्वीकार हो जायेगा अर्थात् सकारात्मक संदेश अवचेतन मन में पहुंच जायेगा। हम हमारे जीवन में सुख-शांति-समृद्धि चाहते हैं तो वैसा ही विचार सुबह-सुबह करें। जैसा विचार भरेंगे वैसा ही पायेंगे। आप समस्या का समाधान भीतर से ही पायेंगे।



सिवानी-हरियाणा। कृषि राज्यमंत्री जे.पी. दलाल के सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञान चर्चा के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रजेन्द्र बहन तथा ब्र.कु. निर्मल बहन। साथ हैं नगर पालिका के वाइस चेयरमैन रमेश पोपली।



रेवाखोल-ओडिशा। धर्मेन्द्र प्रधान, केन्द्रीय शिक्षा एवं दक्षता विकास मंत्री, भारत सरकार को ईश्वरीय सौगात देते हुए उप सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजु बहन। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. भागीरथी भाई तथा ब्र.कु. मिनी।



अहमदनगर-महाराष्ट्र। सुप्रसिद्ध अभिनेता तथा महाराष्ट्र के शिरूर लोकसभा क्षेत्र के सांसद डॉ. अमोल कोल्हे को परमात्म परिचय देने एवं संस्थान की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। साथ ही उन्हें माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया।



हजारीबाग-झारखंड। दीपावली महोत्सव पर आयोजित श्री लक्ष्मी नारायण और गणेश की चैतन्य झाँकी में उपस्थित हैं कांग्रेस की पूर्व विधायक श्रीमति निर्मला देवी, सीनियर सेक्शन इंजीनियर विजय कुमार सिन्हा, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की मैनेजर विद्या सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हर्षा दीदी तथा अन्य।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आर्मी कॉलेज ऑफ मटेरियल मैनेजमेंट, जबलपुर के ऑडिटोरियम में आयोजित दो दिवसीय 'स्व-प्रबंधन शिविर' के दौरान ब्र.कु. विनीता बहन, ब्र.कु. आरती बहन व भारतीय सेना के रिटायर्ड लेफ्टिनेंट कर्नल ब्र.कु. विकास राव चौहान ने कॉलेज के विद्यार्थियों, स्टाफ तथा कॉलेज से जुड़े परिवारों का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर कॉलेज के कमांडेंट लेफ्टिनेंट जनरल राकेश कपूर ने कार्यक्रम के लिए अपनी शुभकामनायें व्यक्त कीं। कार्यक्रम में लगभग तीन सौ आर्मी पर्सन व उनके परिवारों ने भाग लिया।



वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। उद्योगपतियों एवं व्यवसायियों के लिए आयोजित 'आध्यात्मिकता के साथ जीवन और व्यापार' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् उपस्थित हैं बिजनेस एंड इंडस्ट्रीज विंग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा बहन, वडोदरा भाजपा प्रमुख डॉ. विजय भाई शाह, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के प्रमुख डॉ. मितेश भाई शाह, सीआरडीईआई के प्रमुख प्रीतेश भाई, पॉलीफॉर्म कंपनी के चेयर पर्सन शिवंदर चावड़ा, गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष हरजीत सिंह, राधिका ज्वेलर्स के ओनर शशीकांत भाई तथा अन्य। कार्यक्रम का शहर के प्रमुख 300 इंडस्ट्रियलिस्ट एवं बिजनेसमैन ने लाभ लिया।



मुम्बई-घाटकोपर(महारा.)। सबअर्बन कलेक्टर मिलिंद बोरिकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकु दीदी।



पाटण-सातारा(महारा.)। पी.एस.आई. पाटील साहेब को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विद्या बहन।



अयोध्या-उ.प्र.। हनुमान गढ़ी के महंत संजय दास जी से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते ब्र.कु. सुधा बहन।



दुर्ग-छ.ग.। जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेश श्रीवास्तव को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय पत्रिका व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. रूपाली बहन।



फतेहपुर-उ.प्र.। कैबिनेट मिनिस्टर एवं महामण्डलेश्वर साध्वी निरंजन ज्योति जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीरू बहन।



गनौर-हरियाणा। सेवाकेन्द्र पर आयोजित दीपावली महोत्सव में विधायक निर्मल चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अर्चना बहन।



संगरेडू-आ.प्र.। ज्ञान चर्चा के पश्चात् एडिशनल डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन्स जज, मेदक, बी.पापी रेड्डी को ब्लेसिंग कार्ड देकर उसके बारे में बताते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।



पहुंचाने का काम करती है। इससे जुड़ा घरेलू नुस्खा यह है कि आप इलायची को पानी में उबाल लें। थोड़ी देर तक उबालें जिससे इसका फ्लेवर पानी में आ जाए। 10 मिनट बाद गैस को बंद कर दें। और पानी को छान लें। पानी को छानने के बाद गुनगुना होने पर इसको पी लें। इससे आपको पेट से जुड़ी परेशानी जैसे कि पेट दर्द, छाले, गैस, आंत में इंफेक्शन से आराम मिलेगा।

खराब बैक्टीरिया से लड़ने में
जब आप मार्किट में टूथपेस्ट खरीदने जाते हैं तब आपको कई फ्लेवर की

सर्जरी के बाद आपको स्ट्रॉंग फ्लेवर जैसे कि इलायची, अदरक, पुदीना सूंघने से राहत मिल सकती है। जैसा कि आप जानते हैं कि हर किसी का शरीर एक जैसा नहीं होता है और यह बेहोशी के इंजेक्शन देने की मात्रा पर भी निर्भर करता है।

ऑक्सीजन में सुधार करने में
इलायची आपके फेफड़ों के काम करने के तरीके को सुधारती है और ऑक्सीजन लेने की मात्रा में भी सुधार करती है। एक स्टडी में, दो ग्रुप बनाए गए। पहले ग्रुप को इलायची सूंघने के

साफ रंग

इलायची में विटामिन सी होता है जो एक अच्छा एंटीऑक्सीडेंट है। जो शरीर में खून के बहाव को सामान्य बनाए रखने में मदद करता है। इससे त्वचा का रंग भी हल्का होने लगता है।

साइड इफेक्ट्स

पित्त पथरी से गुजरने वाले लोगों के लिए साइड इफेक्ट्स

अगर आप पित्त पथरी से गुजर रहे हैं तो इलायची का सेवन करने से पहले अपने डॉक्टर से सलाह जरूर लें। इलायची के बीज पथरी को बढ़ा सकते हैं जो आपके लिए दर्द भरा हो सकता है। आपकी सेहत के अनुसार डॉक्टर आपको बताएंगे कि आप इलायची का सेवन कर सकते हैं या नहीं।

त्वचा पर साइड इफेक्ट्स

लंबे समय से और बार-बार इलायची खाने से स्किन एलर्जी हो सकती है। गलत तरीके से इलायची का सेवन करने से स्किन पर दाग-धब्बे हो सकते हैं।

रेस्पिरेटरी एलर्जिक रिपक्शन

अगर इलायची के सेवन से आपको एलर्जी है तो यह लक्षण नजर आएंगे...

सांस लेने में दिक्कत।
सीने में दर्द।

अजीब महसूस होना।

सीना और गला सख्त हो जाना।

हरी इलायची कर दे ज़िंदगी को भी हरा-भरा

भारत मसालों का देश है। एक मसाला जो अपनी खूबसूरती और स्वाद के लिए जाना जाता है, वो है-इलायची। अपने फ्लेवर और खूबसूरती की मदद से इलायची आपके खाने को अलग स्वाद देती है। इसको पुलाव, बिरयानी, तरी वाली डिश में इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन क्या इलायची को सिर्फ इसके फ्लेवर के लिए इस्तेमाल किया जाता है? बिल्कुल नहीं, स्वाद होने के साथ - इलायची के फायदे भी कई हैं। यह छोटी, हरे रंग की इलायची के बारे में जानने के लिए बहुत कुछ है जो बहुत लाभदायक है।

इलायची खाने के फायदे

ब्लड प्रेशर कम करने में मदद
इलायची के फायदे में एक सबसे

महत्वपूर्ण फायदा यह है कि यह आपको हाई ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद करता है। यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होती है। पूरे दिन में 3 ग्राम इलायची खाने से एक हद तक ब्लड प्रेशर सामान्य बना रहता है। इसमें प्राकृतिक रूप से मूत्रवर्धक प्रभाव होता है। जो मूत्र को सही मात्रा में आपके शरीर से निकालने में मदद करता है।

पाचन सम्बंधी बीमारियों को ठीक करने में

भारत में इस्तेमाल किए जाने वाले अधिकतर मसालों को पाचन शक्ति से सम्बंधित बीमारियों से दूर रखने के लिए जाना जाता है। इसमें इलायची के फायदे बहुत सारे हैं। इलायची में बीमारी ठीक करने के गुण होने के कारण यह पेट में छाले और गैस की परेशानी से आराम

टूथपेस्ट मिलती हैं। अधिकतर में प्राकृतिक सामग्री लौंग और इलायची मिलेंगे। ऐसा क्यों? क्योंकि इलायची के फायदे टूथपेस्ट में भी इस्तेमाल किए जाते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि यह आपको खराब बैक्टीरिया और बदबू से दूर रहने में मदद करता है। इलायची का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह आपको मुंह में होने वाले बैक्टीरिया से दूर रखती है और साथ ही दांतों की बीमारी से भी दूर रखती है।

सर्जरी के बाद ठीक करने में

सर्जरी से पहले बेहोशी का इंजेक्शन देने के कारण आपको सर्जरी के बाद बेहोशी जैसा लगता है। ऐसे समय में इलायची आपकी मदद करेगी। रिसर्च के अनुसार, अदरक, इलायची और तारगोन का तेल गर्दन पर लगाने से जी मिचलाना और उल्टी के लक्षण से राहत मिलती है।

बाद ट्रेडमिल पर कसरत करने के लिए कहा गया, वहीं दूसरे ग्रुप को बिना इलायची सूंघे ट्रेडमिल पर कसरत करने को कहा गया। कसरत के बाद जब दोनों ग्रुप के ऑक्सीजन लेने को मापा गया तो पहले ग्रुप के लोगों के द्वारा ऑक्सीजन की मात्रा ज़्यादा ली गई थी। जिससे यह साफ होता है कि इलायची सही से सांस लेने में मदद करती है।

सांस लेने की दिक्कत से राहत

इलायची खाने से अस्थमा जैसी बीमारी में आराम मिलता है। इससे सांस आराम से ली जाती है और परेशानी भरी सांस से राहत मिलती है।

सही से खून का बहाव और



ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। दीपावली महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी तथा राजयोगिनी ब्र.कु. विजय दीदी। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतकार एवं गीतकार पंडित बृजेश मिश्रा तथा अन्य गणमान्य लोग शामिल रहे।



रतलाम-नज़रबाग कॉलोनी(प्रेम निकुंज)। 'निःशुल्क जोड़ों का दर्द निदान शिविर' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा बहन, डॉ. ब्र.कु. राजू, डॉ. ब्र.कु. श्याम, ब्र.कु. नरेश, ब्र.कु. लालू, रत्नेश विजयवर्गीय, विशाल वर्मा, गोपाल जोशी, सुलोचना वर्मा तथा अन्य।



पाटण-सातारा(महा.)। गृह राज्यमंत्री शंभुराने देसाई साहेब को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विद्या बहन।



जैतवार-म.प्र.। नवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में केशव बंसल तथा एडवोकेट चंद्रदेव पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना बहन तथा ब्र.कु. मनोज भाई।



भादरा-राज.। एसीजेएम शालिनी शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकांता बहन।



माउण्ट आबू-राज.। ब्रह्माकुमारीज के सिक्वोरिटी सर्विस विंग द्वारा सी.आई.एस.एफ. (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्वोरिटी फोर्स) के लिए 'इंटेडिक्शन ऑफ स्ट्रेस एंड इन्हेसिंग इनर स्ट्रेन्थ' विषय पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में नॉर्थ से लेह लद्दाख, श्रीनगर, जम्मू आदि, साउथ से कोचीन, त्रिवेन्द्रम आदि, इस्ट से इम्फाल, शिलॉन, गुवाहाटी आदि तथा वेस्ट से भुज, अहमदाबाद आदि 64 इंटरनेशनल व डोमेस्टिक एयरपोर्ट्स के सी.आई.एस.एफ. पर्सनल ने भाग लिया। 1500 सीआईएसएफ पर्सनल सहित सीनियर कमाण्डेंट अजय दहिया, सीआईएसएफ युनिट, आईजीआई दिल्ली एयरपोर्ट व कमाण्डेंट लाल मोहन, सीआईएसएफ युनिट, गुवाहाटी एयरपोर्ट उपस्थित रहे। प्रो. ब्र.कु. ई.वी. गिरीश, मुम्बई, लेफ्टिनेंट कर्नल विकास चौहान, जबलपुर, ब्र.कु. नीरजा, मुम्बई, ब्र.कु. कमला, दिल्ली तथा ब्र.कु. प्रफुल, पुणे ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया।



शमसाबाद-आगरा(उ.प्र.)। आध्यात्मिक चरित्र निर्माण प्रदर्शनी में ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् थानाध्यक्ष आनंद वीर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन व अन्य।

रिलेशनशिप यानी ऊर्जा का आदान-प्रदान

हम सभी के जीवन में हमारे रिश्ते बहुत महत्वपूर्ण हैं। रिलेशनशिप यानी ऊर्जा का आदान-प्रदान। हमारे रिश्तों में, परिवार के साथ, दोस्तों के साथ, हमारी काम की जगह पर, सहकर्मियों के साथ, हम जो सोचते हैं, अनुभव करते हैं, बोलते हैं, जो व्यवहार करते हैं, वह हमारा स्पंदन है। सामने वाला जो सोचता है, महसूस करता है, व्यवहार करता है, वह उनका स्पंदन है जो मुझ तक पहुंचता है। यह जो ऊर्जा का आदान-प्रदान है, इसे ही रिश्ता कहते हैं।

रिश्ता सिर्फ वो नहीं है जो सिर्फ लेबल के जरिए होता है। यानी सिर्फ माता-पिता का बच्चों से, दोस्त-दोस्त का, पति-पत्नी का, पड़ोसी का पड़ोसी से रिश्ता ही रिश्ता नहीं है। रिश्ता दो आत्माओं के बीच ऊर्जा का आदान-प्रदान है। फिर वो दो आत्माएं अलग-अलग भूमिका निभा रही हैं। जैसे पिता की, दोस्त की। हम अक्सर सोचते हैं कि रिश्ता वो है जो बाहर दिखता है। मतलब एक-दूसरे से हम कैसे बात करते हैं, कैसे व्यवहार करते हैं, एक-दूसरे के लिए क्या करते हैं। कितनी बार हम खुद को ये कहते हुए सुनते हैं आपने इस रिश्ते के लिए क्या किया। यह कितना महत्वपूर्ण कथन है। सामने वाला कहेगा मैंने इस रिश्ते के लिए ये किया...वो किया...। मैंने न दिन देखा, न रात। मैंने अपनी क्षमता से ज्यादा इनके लिए किया। मैंने अपने बारे में नहीं सोचा, सिर्फ इनके बारे में सोचा। हमारा फोकस यह हो जाता है कि हमने एक-दूसरे के लिए क्या किया। लेकिन इससे ज़्यादा ज़रूरी है कि हमने एक-दूसरे के लिए क्या व कैसा सोचा।

रिश्ता वो नहीं जो हम उनके लिए कर रहे हैं, रिश्ता वो है जो हम उनके लिए सोच रहे हैं। क्योंकि मन की तरफ हम ज़्यादातर ध्यान नहीं देते हैं। समाज भी इस पर ध्यान दे रहा है कि उन्होंने क्या किया, उसके लिए क्या किया, मेरे



डॉ. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

साथ काम करने वालों ने मेरे लिए क्या किया, कंपनी के लिए क्या किया। हमारा समाज हमने क्या किया इस पर ध्यान केंद्रित करता है। यानी हम उस पर फोकस करते हैं जो दिखता है। रिश्ते जब सिर्फ 'क्या किया' से बनते हैं, तो बहुत मजबूत नहीं होते।

रिश्ता वो नहीं जो हम उनके लिए कर रहे हैं, रिश्ता वो है जो हम उनके लिए सोच रहे हैं।

क्योंकि हम सारा दिन जो कर रहे हैं, रिश्तों के लिए ही तो कर रहे हैं। चाहे घर के रिश्तों के लिए, चाहे ऑफिस के रिश्तों के लिए, चाहे ऑफिस के लिए। और इतना करने के बाद, इतनी मेहनत के बाद, अपना पूरा जीवन उस रिश्ते में लगा देने के बाद हम ये महसूस करते हैं कि ये रिश्ता उतना मजबूत नहीं है। छोटी-सी बात से रिश्ता हिलने लगता है।

'ये छोटी-छोटी बातों में नाराज क्यों हो जाते हैं।' 'इतना मैंने इनके लिए किया वो इनको याद नहीं रहता, ये छोटी-सी बात पकड़कर बैठे हैं।' 'कल तुमने ऐसा नहीं किया।' 'किया' शब्द पर इतना ज़्यादा ध्यान है कि हमें लगता है कि इतना करने के बाद भी रिश्ता मजबूत नहीं है। इसलिए आज थोड़ा-सा बदलाव करते हैं। रिश्ता पहले

आत्मा के साथ होता है। किसी भी एक रिश्ते को ढूँढ़ें, जिसमें आपको लगता है कि दो लोगों के बीच जो सामंजस्य, आसानी, ऊर्जा का खूबसूरत बहाव होना चाहिए, वह नहीं है।

हम कोशिश बहुत कर रहे हैं लेकिन कोई गलतफहमी, कोई नाराजगी, कोई दुःख, कोई अधूरी उम्मीद है। ये क्या है, उसको जांचना है। तो उस रिश्ते में जाकर, उस व्यक्ति के लिए, मन के पास आइए। आप ये नहीं देखिए कि आपने उनके लिए क्या-क्या किया है। अपने मन के अंदर आइए। सबसे पहले इसपर ध्यान दीजिए कि उनके लिए वह सब करते हुए हमारे मन की स्थिति कैसी थी। जैसे बच्चों और माता-पिता के बीच एक खूबसूरत रिश्ता होता है, निःस्वार्थ भाव। माता या पिता को बदले में कुछ नहीं चाहिए होता।

वे बच्चे के लिए सिर्फ देते ही हैं। ये बहुत ही सुंदर निःस्वार्थ रिश्ता है। तो देखें कि किसी के लिए कुछ करते वक्त आपके मन की स्थिति क्या थी। कोई भी आपसे पूछे आप इतनी मेहनत क्यों करते हो, थोड़ा आराम करो ना, कितना भागते रहते हो सारा दिन, परिवार के लिए, घर के लिए, बच्चों के लिए भागते रहते हो, फिर भी बच्चे नाराज हो जाते हैं। वे सम्मान नहीं करते हैं। हमारे साथ वक्त नहीं बिताते हैं। अपनी ही दुनिया में रहते हैं, हमारी तरफ ध्यान नहीं देते हैं।

छोटी-छोटी बातों पर इतनी उम्मीदें हैं कि उम्मीदें पूरी नहीं होतीं और हम आहत हो जाते हैं। जब हम सोचते हैं कि मैंने इतना किया, ये अभी भी मुझसे संतुष्ट नहीं हैं। संतोष दिखाई नहीं दे रहा है। मैं और क्या करूँ इनके लिए, जिससे ये संतुष्ट हो जायें। हम कभी-कभी कह भी देते हैं अब मैं और क्या कर सकता हूँ। आप तो खुश ही नहीं होते हैं, इतना सब करने के बाद भी। तो ये रिश्ते पर सवाल बन जाता है। बस इसी सवाल और सोच से हमें बचना होगा।



यह जीवन है

जीवन का आखिरी समय कैसे व्यतीत होगा इसका फैसला हमारा धन नहीं बल्कि हमारे द्वारा किये गये कर्म अर्थात् व्यवहार और संस्कार तय करेंगे। इसलिए हर कर्म बहुत ही सोच-समझ कर करें क्योंकि न किसी की दुआ खाली जाती है और न ही किसी की बहुआ, तो हम सभी को दुआएं देते रहें और सभी से दुआएं लेते रहें और एक बात हमेशा याद रखना कि हमारे प्रत्येक कर्म किसी न किसी तथ्य से ज़रूर प्रभावित होते हैं।

अतः ध्यान रहे... जितने ऊंचे से ऊंचे तथ्यों से हमारे कर्म प्रभावित रहेंगे, उतने ही ऊंचे हमारे कर्म तो होंगे ही, फलस्वरूप हमारे जीवन में सुख, शांति, खुशी, आनन्द, प्रेम, शक्ति... स्वतः लाएंगे।



इंदौर-म.प्र. विश्व यादगार दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक वरुण कपूर, अति. पुलिस महानिरीक्षक हरिनारायणचारी मिश्र, ए.आर.टी.ओ. राजेश गुप्ता, राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. उषा बहन, ब्र.कु. जयंती बहन, अति. पुलिस अधीक्षक अनिल पाटीदार, उप पुलिस अधीक्षक संतोष उपाध्याय तथा थाना प्रभारी दिलीप सिंह परिहार।



बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। दीपावली पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सरोज दीदी, उपक्षेत्रीय निदेशिका, एस.सदाक्षरी, चेयरमैन, रमनाश्री ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज एंड कॉलमनिस्ट, बेंगलुरु, श्रीनिवास राजू, मैनेजिंग डायरेक्टर, उन्नति प्रोजेक्ट, बेंगलुरु तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



छोटा उदपुर-गुज.। भाई दूज के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आने पर महाराजा जय प्रताप सिंह चौहान को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. मोनिका बहन। साथ हैं महारानी तनवीर चौहान।



नवापारा-राजिम(छ.ग.)। 'चलो आसमां की ओर' विषयक त्रिदिवसीय निःशुल्क शिविर के दौरान डॉ. राजेन्द्र गदिया, समाजसेवी डोली बोथरा, समाजसेवी हेमू भाई, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. पुष्पा बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



झालावाड़-डग(राज.)। कस्बे में दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम में उपस्थित हैं सरपंच शंभू सिंह मंडलोई, मंडल अध्यक्ष गोविंद सिंह परिहार, उपसरपंच सुरेश कुमावत, ब्र.कु. मीना दीदी तथा अन्य।



अतावीरा-ओडिशा। ज्ञान चर्चा के पश्चात् पुलिस स्टेशन के इंस्पेक्टर इंचार्ज दिलीप कुमार बेहरा को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. बनीता बहन।



इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञानदीप भवन में दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन, ब्र.कु. ललिता बहन, चैतन्य देवी लक्ष्मी और कुमारी परी।

परमात्म ऊर्जा

फरिश्ते समान स्थिति बनाने के लिए...

अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप दादा सदा साथ हैं। कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे तो बापदादा की स्मृति रखते अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो तो हल्के हो जायेंगे। क्योंकि बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव

करेंगे। फरिश्तों के समान नाचते रहेंगे। दिन-रात 24 घंटे मन से डाँस करते रहेंगे। देह अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। देही अभिमानी बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रॉस कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने अस्मुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फरिश्ते बन फरिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फरिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।

कथा सरिता



जब मैं छोटा था तो एक सब्जी बेचने वाली हमारे घर सब्जी बेचने आती थी। मेरी माँ उससे ही सब्जी खरीदती थी। रविवार को वह सब्जी बेचने वाली पालक के बंडल लेकर आई। उनकी कीमत उसने एक रूपये प्रति बंडल बोली। मेरी माँ का कीमत प्रस्ताव उसकी बोली हुई कीमत से ठीक आधा था। हालाँकि माँ ने उससे वादा किया

“चलिए इसे 75 पैसे बंडल का तय कर देते हैं।” मेरी माँ ने ना में अपना सिर हिलाया और अपने मूल प्रस्ताव 50 पैसे बंडल पर अटकी रही। सब्जी वाली चली गई। वे दोनों एक-दूसरे की रणनीतियों को भली भाँति जानती थीं। सब्जी वाली मुड़ी

धीरे उछालकर वजन और गुणवत्ता की पैनी जाँच की।

बंडलों की प्रारंभिक छंटनी के बाद उन्होंने अंततः अपनी संतुष्टि के चार बंडल छांट लिए और छोटे सिक्कों से उनको पूरा भुगतान कर दिया।

सब्जी वाली ने बिना गिने पैसे ले लिए। जैसे ही वह उठी, वह चक्कर आने के कारण लड़खड़ा गई। मेरी माँ ने उसका हाथ पकड़ कर पूछा कि क्या उसने सुबह से खाना नहीं खाया? सब्जी वाली ने कहा, “नहीं, आज की कमाई से ही, मुझे कुछ चावल खरीदना है और घर जाकर खाना बनाना है।

मेरी माँ ने उसे बैठने के लिए कहा। माँ जल्दी से अन्दर गई और कुछ चपातियों और सब्जी के साथ तेजी से वापस आई और सब्जी वाली को खाने को दी। माँ ने पानी की बोतल भी उसे दी और उसके लिए चाय बनाने लगी। सब्जी वाली ने भूख और कृतज्ञतापूर्वक खाना खाया, पानी पिया और चाय पी। उसने मेरी माँ का तहदिल से शुक्रिया करते हुए, अपनी सब्जी की टोकरी सिर पर रखी और अपने काम पर चली गई।

मैं हैरान था। मैंने अपनी माँ से कहा, आप दो रूपये के सामान के लिए मोलभाव करने में होशियारी दिखा रही थीं, लेकिन उस सब्जी वाली को मंहंगा भोजन देने में उदार थीं, ऐसा क्यों?

मेरी माँ मुस्कराई और बोली, “मेरे प्यारे बच्चे, व्यापार में कोई दया नहीं होती और दयालुता में कभी कोई व्यापार नहीं होता।



दयालुता का कोई मोल नहीं

था कि वह उस कीमत पर उससे चार बंडल खरीदेगी। कुछ देर तक दोनों अपनी-अपनी कीमत पर अड़े रहे। सब्जी वाली ने विनम्रता से कहा कि वह उस कीमत पर अपनी लागत भी नहीं वसूल कर पायेगी। उसने सिर पर टोकरी लादी और चली गई।

चार कदम आगे बढ़ने के बाद, सब्जी वाली पीछे मुड़ी और चिल्ला कर बोली, और हमारे घर तक वापस आई। मेरी माँ दरवाजे पर उसका जैसे इंतजार ही कर रही थी। उनके चेहरे पर एक विजयी मुस्कान थी।

यह सौदा मेरी माँ के प्रस्ताव बोली पर ही हुआ था। सब्जी वाली वहाँ स्थिर बैठ गई जैसे कि वह एक समाधि में हो। मेरी माँ ने प्रत्येक बंडल को अपने हाथ से धीरे-

एक बार एक बच्चे के दादा जी जो शाम को घूमकर आने के बाद बच्चों के साथ प्रतिदिन सायंकालीन पूजा करते थे। बच्चा भी उनकी इस पूजा को देखकर अंदर से स्वयं इस अनुष्ठान को पूर्ण करने की इच्छा रखता था, किन्तु दादा जी की उपस्थिति उसे अवसर नहीं देती थी। एक दिन दादा जी को शाम को आने में विलंब हुआ, इस अवसर का लाभ लेते हुए बच्चे ने समय पर पूजा प्रारम्भ कर दी। जब दादा जी आये, तो दीवार के पीछे से बच्चे की पूजा देख रहे थे। बच्चा बहुत सारी अगरबत्ती एवं अन्य सभी सामग्री का अनुष्ठान में यथाविधि प्रयोग करता है और फिर अपनी प्रार्थना में कहता है कि भगवान जी प्रणाम आप मेरे दादा जी को स्वस्थ रखना, और दादी के घुटनों के दर्द को ठीक कर देना क्योंकि दादा और दादी को कुछ हो गया, तो मुझे चॉकलेट कौन देगा। फिर आगे कहता है, भगवान जी मेरे सभी दोस्तों को अच्छा रखना, वरना मेरे साथ कौन खेलेगा। फिर मेरे पापा और मम्मी को ठीक रखना, घर के कुत्ते को भी ठीक रखना, क्योंकि उसे कुछ हो गया, तो घर को चोरों से कौन बचाएगा (लेकिन भगवान यदि आप बुरा न मानो तो एक बात कहूँ, सबका ध्यान रखना, लेकिन उससे पहले आप अपना ध्यान रखना, क्योंकि आपको कुछ हो गया, तो हम सबका क्या होगा) इस प्रथम सहज प्रार्थना को सुनकर दादा की आँखों में भी आंसू आ गए, क्योंकि ऐसी प्रार्थना न कभी की थी, और न सुनी थी। कदाचित् इसी सहजता का अभाव मनुष्य को सभी प्रकार के यथोचित ईश्वरीय अनुष्ठानोपरांत भी जन्मजन्मांतर तक ईश्वर का बोध भी नहीं करा पाता है।



एक पूजा ऐसी भी...



नई दिल्ली-लोधी रोड। शैलेन्द्र शर्मा, महानिदेशक, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के साथ ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. गिरिजा बहन तथा ब्र.कु. पोयूष भाई।



राजकोट-गुज.। पाँच स्वरूपों के अभ्यास से युक्त दीपावली कार्यक्रम में केक काटते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

दिव्य बुद्धि अर्थात् होलीहंस बुद्धि



दिव्य बुद्धि बल अति श्रेष्ठ बल है। सिर्फ इसको यूज करो। जैसा समय उस विधि से यूज करो तो सर्व सिद्धियाँ आपकी हथेली में हैं। सिद्धि कोई बड़ी चीज नहीं है, सिर्फ दिव्य बुद्धि की सफाई है।

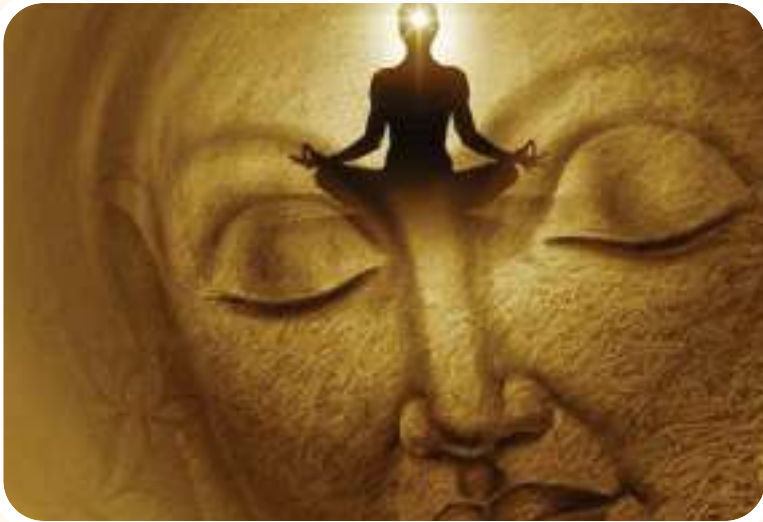
दिव्य बुद्धि अर्थात् होलीहंस बुद्धि। हँस अर्थात् स्वच्छता, क्षीर और नीर को या मोती और पत्थर को पहचान मोती ग्रहण करने वाले। जानते हैं कि यह कंकड़ है, यह मोती है लेकिन कंकड़ को धारण नहीं करते। इसलिए होलीहंस संगमयुगी ज्ञान-स्वरूप विद्या देवी 'सरस्वती' का वाहन है। आप सभी ज्ञान स्वरूप हो, इसलिए विद्यापति या विद्या देवी हो। यह वाहन दिव्य बुद्धि की निशानी है। आप सभी ब्राह्मण, बुद्धियोग द्वारा तीनों लोकों की सैर करते हो। बुद्धि को भी वाहन कहते हैं। वह दिव्य बुद्धि का वाहन सभी वाहन से तीव्रगति वाला है। दिव्य बुद्धि को बुद्धिबल भी कहा जाता है। क्योंकि बुद्धिबल द्वारा ही बाप से सर्वशक्तियाँ कैच कर सकते हो। इसलिए बुद्धिबल कहा जाता है।

जैसे साइंस बल है। साइंस बल कितनी हद की कमाल दिखाते हैं। कई बातें जो आज मानव को असम्भव लगती है वह सम्भव कर दिखाते हैं। लेकिन यह विनाशी बल है। साइंस बुद्धिबल है लेकिन दिव्य बुद्धिबल नहीं है, संसारी बुद्धि है, इसलिए इस संसार के प्रति, प्रकृति के प्रति ही सोच सकते हैं और कर सकते हैं। दिव्य बुद्धिबल मास्टर सर्वशक्तिवान बनाता है, परमात्म पहचान, परमात्म मिलन, परमात्म प्राप्ति की अनुभूति कराता है। दिव्य बुद्धि जो चाहो, जैसे चाहो, असंभव को संभव करने वाली है। दिव्य बुद्धि द्वारा हर कर्म में परमात्म प्योर टचिंग अनुभव कर

सफलता का अनुभव कर सकते हैं। दिव्य बुद्धि कोई भी माया के वार को हार खिला सकती है। जहाँ परमात्म टचिंग है, प्योर टचिंग है, मिक्सचर नहीं, वहाँ माया की टचिंग अथवा वार असम्भव है। माया का आना तो छोड़ो लेकिन टच भी नहीं कर सकती। माया दिव्य बुद्धि के आगे सफलता की वरमाला बन जाती है, माया नहीं रहती। जैसे द्वापर के रजोगुणी ऋषिमुनि आत्माएं शेर को भी अपनी शक्ति से शांत कर देते थे ना! शेर साथी बन जाता, वाहन बन जाता, खिलौना बन जाता- परिवर्तन हो जाता है ना! तो आप सतोप्रधान, मास्टर सर्वशक्तिवान, दिव्यबुद्धि वरदानी - उन्हीं के आगे माना क्या है, माना दुश्मन से परिवर्तन नहीं हो सकती? दिव्य बुद्धि बल अति श्रेष्ठ बल है। सिर्फ इसको यूज करो। जैसा समय उस विधि से यूज करो तो सर्व सिद्धियाँ आपकी हथेली में हैं। सिद्धि कोई बड़ी चीज नहीं है, सिर्फ दिव्य बुद्धि की सफाई है। जैसे आजकल के जादूगर हाथ की सफाई दिखाते हैं ना। वह दिव्य बुद्धि की सफाई सर्व सिद्धियों को हथेली में कर देती है।

आप सभी ब्राह्मण आत्माओं ने सर्व सिद्धियाँ प्राप्त की हैं लेकिन दिव्य सिद्धियाँ साधारण नहीं। तब आपकी मूर्ति के द्वारा आज तक भी भक्त सिद्धि प्राप्त करने के लिए जाते हैं। जब सिद्धि स्वरूप बने हैं तब तो भक्त आपसे माँगने आते हैं। तो समझा दिव्य बुद्धि की क्या कमाल है! स्पष्ट हुई ना दिव्य बुद्धि की कमाल!

समर्पण से मिलता है परमात्मा का प्यार



कौन नहीं जानता कि मन चंचल है। वह निरंतर संकल्पों का प्रवाह फैला रहा है। वे संकल्प विभिन्न व्यक्तियों व परिस्थितियों से प्रभावित होकर चल रहे हैं। ऐसे योगी तो गिनती के ही होंगे जो स्वेच्छानुसार मन की धारा को मोड़ने में समर्थ हैं। प्रायः तो मन का वेग ही मनुष्य को अपनी धारा में बहा ले जाता है। मन में सतत फूटने वाली ये धारायें विभिन्न रूप से भी परमात्मा तक पहुंच जाये यही है मन का समर्पण। हमें यह देखना चाहिये कि क्या मन में वो ही संकल्प उठ रहे हैं जो ईश्वर को पसंद हैं? कोई भी कार्य ऐसा ना हो, जो ईश्वरीय कार्यों में विघ्न बनता हो। प्रकृति के लिए अभिशाप हो और

मनुष्यों के लिए अकल्याणकारी हो। मन की इस सूक्ष्म शक्ति का आभास होना ईश्वरीय समर्पण का भाव दर्शाता है।

विवेकशील प्राणी का विवेक मनुष्य की जीवन रूपी गाड़ी को बरबस पतन के मार्ग पर खींच रहा है। बुद्धि का अहंकार उसे परेशानी की चिंगारियों में झुलसा रहा है। ज्यों-ज्यों मन सांसारिकता में लिस होता जा रहा है, मन का चैन लुट रहा है। मन की व्याकुलता बढ़ रही है। धन की अधिकता मन का सुख छीन रही है। क्योंकि मनुष्य ने धन इकट्ठा करना तो सीख लिया है परन्तु वह उसके सदुपयोग की कला भूल गया है। लक्ष्मी तो चंचल है वह कभी किसी के घर

की शोभा बढ़ाती है, तो कभी अन्य को मालामाल कर देती है। फिर भी धन का अहंकार कभी कम नहीं होता। धन का नशा उसे पागल बना देता है। वह अपनी सीमाओं को भी भूल बैठता है और मदमस्त हाथी की तरह अपने विवेक को खो देता है। तब ही तो लक्ष्मी का वाहन उल्लू दिखाया है क्योंकि अत्यधिक धन बुद्धि को मलीन करने लगता है और यही कारण है कि सरस्वती के वस्त्रों को सदैव धनाभाव का कष्ट सहना पड़ता है।

अतः राजयोग के पथ पर निरंतर प्रगति के अभिलाषी महान विभूतियों को, अनेक सिद्धियों के स्वामी बनने की अभिलाषा रखने वालों को एकाग्रता व एकांत समर्पण की गहनता को भी स्वीकार करना चाहिये। समर्पण एक सतत प्रयास है। जो विभिन्न पहलुओं पर अपना ध्यान लगाये रहेंगे। हमारे पास हमारा तन-मन-बुद्धि व निरंतर किये जाने वाले कार्य हैं। यों तो कलियुग में मनोविकास भी मनुष्य की निधि या सम्पत्ति बन चुके हैं और ये विकास ही धीरे-धीरे उनकी उन्नति में बाधा बनते जाते हैं। लोभ-लालच वश होकर वे सद्कार्यों की ओर बढ़ नहीं पाते। अतः जो साधक सच्चे दिल से अपने मनोविकारों को स्वाहा करते हैं उनका सारा विष परमात्मा शिव द्वारा हलाहल कर लिया जाता है। और बदले में उन्हें मिलता है दैदीव्यमान उज्ज्वल दिव्य व निर्मल जीवन।

ब्र.कु. निर्मला अग्रवाल, शुजालपुर मंडी

एक नई सोच

{ जीवन की सुन्दरता }

जीवन की सुंदरता मनुष्य के आपसी तालमेल से जीने में है, सभी रिश्तों को साथ लेकर चलने में है। लेकिन कई बार हम छोटी बातों के कारण अपना बड़ा नुकसान कर लेते हैं और रिश्तों में दूरियां ले आते हैं। कभी-कभी हम सोचते हैं कि हमें कोई फर्क नहीं पड़ता कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, हम तो बिल्कुल सही हैं...

लेकिन हम ये भूल जाते हैं कि फर्क तो बहुत पड़ता है, लोगों के मन में हमारे प्रति उठने वाले संकल्प, हमारे मन की स्थिति को प्रभावित करते हैं। इसलिए हमें “मुझे परवाह नहीं” की जगह पर “मुझे सबकी परवाह है” ये सोचना है। तो आइए हम सभी इसका अभ्यास करेंगे अर्थात् इसे जीवन में लाएंगे तो हम स्वयं से सदा खुश रहेंगे और दूसरे भी हमसे खुश और संतुष्ट रहेंगे।



कायमगंज-फर्रुखाबाद (उ.प्र.)। भाजपा केन्द्रीय राज्यमंत्री अन्नपूर्णा जी, एवीएन सांसद मुकेश राजपूत एवं डॉ. मिथिलेश अग्रवाल को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मिथिलेश बहन।



मुम्बई-मलाड। ब्रह्माकुमारीज द्वारा विश्व यादगार दिवस पर लिबर्टी गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. श्याम अग्रवाल, आई सजर्न एंड सोशल वर्कर, रमेश पवार, एस.आई., ट्राफिक डिपार्टमेंट, मलाड, राजयोगिनी ब्र.कु. कुती बहन, नेशनल कोऑर्डिनेटर, ट्रांसपोर्ट एंड ट्रेवल विंग, ब्रह्माकुमारीज ब्र.कु. शोभा बहन तथा अन्य।



भोपाल-रोहित नगर (म.प्र.)। सड़क दुर्घटनाओं में पीड़ितों की स्मृति में विश्व यादगार दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सड़क पर पीड़ितों की याद में फूलों से श्रद्धांजलि के शब्द लिखे गये एवं सैकड़ों भाई-बहनों द्वारा दीप जलाकर उन्हें स्नेहपूर्ण भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर अपने सम्बोधन के पश्चात् सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना बहन ने सभी को यातायात नियमों के पालन की प्रतिज्ञा कराई।



रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के शान्ति शिखर भवन में आयोजित 'दीपावली मिलन समारोह' में दीप प्रज्वलित करते हुए पं. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव शर्मा, छ.ग. उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एवं पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति लाल चन्द भादू, क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी तथा अन्य।



जम्मू। चन्द्र मोहन गुप्ता, मेयर, जे.एम.सी. को भाई दूज के अवसर पर तिलक लगाते हुए ब्र.कु. सुदर्शन बहन। साथ हैं शौला हांडू, डायरेक्टर, रेलवे बोर्ड।



फतेहपुर-बाराबंकी (उ.प्र.)। दीपावली पर्व पर एस.डी.एम. को ईश्वरीय सौगात भेंट कर शुभकामनायें देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शौला बहन।



तलेन-म.प्र.। 'स्नेह मिलन एवं भैया दूज' के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए उमाशंकर मुखाती, टी.आई., शिव प्रसाद शर्मा, मालिक, अन्नपूर्णा ट्रेवल्स, संजू भट्टर, नगरपालिका अध्यक्ष, लाड सिंह टेदार, भूमि डीलर, पत्रकार मुकेश यादव, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. मधु बहन तथा अन्य।



बांटवा-गुज.। दीपावली एवं नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'अलौकिक स्नेह मिलन' कार्यक्रम में राजूभाई अम्बरुम वाधवानी, वाइस प्रेसीडेंट, नगरपालिका, बांटवा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रामनाथ भाई, मुख्यालय संयोजक, धार्मिक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू, ब्र.कु. हरीश भाई, मुख्यालय संयोजक, प्रशासनिक सेवा प्रभाग, माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. मधु बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका।

आज के दौर में बहुत ज्यादा लोगों का जो काम जीवन बीमा पॉलिसी पर है या इंश्योरेंस पॉलिसी पर है। सभी अपने-अपने इन्वेस्टमेंट में से कुछ न कुछ इन्वेस्टमेंट इन पॉलिसीस पर जरूर लगाते हैं। ताकि

जीवन बीमा पॉलिसी कराते हैं। अब हम
इसके थोड़ी डिटेल् में चलते हैं...

उस पॉलिसी में हर महीने कुछ न कुछ प्रीमियम भरना होता है। कोई पाँच लाख की होती है तो कोई दस लाख की होती है। इन

आप एक चीज देखिए जो चीज आप भर रहे हो, प्रीमियम भर रहे हैं, वो प्रीमियम कई बार दो महीने बाद का हो जाता है, तीन महीने बाद का हो जाता है, लेकिन उस प्रीमियम में झंझट क्या है कि अगर मैंने टाइम से नहीं दिया तो कुछ न कुछ इंटेस्ट जुड़ के आ जाता है।

लेकिन एक पॉलिसी ऐसी है जिसमें साल का महत्व नहीं है, लेकिन जीवन की हर पल, हर क्षण की गैरन्ती है, वो है परमात्मा की पॉलिसी। यहाँ वन टाइम इन्वेस्टमेंट है और लगभग 63 जन्म का कम्पलीट इन्श्योरेंस है। अब यहाँ वन टाइम पॉलिसी और वन टाइम इन्वेस्टमेंट का मतलब ये है कि जब हमको पता चला कि मैं सुरक्षित तब हूँ, जब मेरे अन्दर क्वालिटीज (विशेषताएँ) हैं, वैल्यूज हैं, एक-एक गुण की सच्ची-सच्ची धारणा है, सच्चाई, सफाई, ईमानदारी है। ये हमारे इतने कीमती इन्वेस्टमेंट हैं। जितना ज्यादा से ज्यादा हम

जोड़ते हैं और शाम तक क्या इन्वेस्ट किया उसका पूरा बही-खाता तैयार कर सकते हैं। आपको प्रीमियम भरने के लिए भी कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। इसमें एक बहुत सुन्दर सेवा का कॉन्सेप्ट (पद्धति) भी है कि आप घर बैठे-बैठे बहुतों की बहुत सुन्दर सेवा करके, अच्छा-अच्छा उनके बारे में सोच के, शुभ भावना-शुभ कामना देकर उनको बहुत शक्तिशाली बना सकते हैं।

गैरन्ती है इस बात की कि आपने जो दिया उसका रिजल्ट उस समय तो अच्छा मिला ही मिला, साथ ही साथ आगे के लिए जमा भी हो गया। आप सोचो इंश्योरेन्स कम्पनियों के भागने का भी सबको खतरा है। यहाँ हमको एक प्रतिशत, माइनस कहे कि या जीरो...जीरो...जीरो...जीरो...जीरो... प्रतिशत, प्वाइंट वाइस भी अगर लें तो ये खतरा नहीं है। बिल्कुल हम सुरक्षित हैं। तो परमात्मा की

भी नहीं मिलेगा, किसी और को मिलेगा। आपके घर वालों को मिलेगा, जो आपके सगे-संबंधी हैं उनको मिलेगा।

आपने उसका सुख थोड़े लिया !

लेकिन ये जो परमात्मा की पॉलिसी है इसमें हम हर पल, हर क्षण अपनी पॉलिसी के अपने ही नॉमिनी होते हैं। और उसका खूब सुख लेते हैं। इतना सुन्दर एजेंट और उसकी कम्पलीट भरपाई करने वाला, हम सबके अति-अति शक्तिशाली और चहेते परमात्मा जो हर पल, हर क्षण हमारे साथ हैं। हमें देना चाहते हैं। हमें बताना चाहते हैं कि आप क्या-क्या करें ताकि आपके अन्दर बल आये, ताकत आये और आप सभी को सुरक्षित करा

सको। बस इन्वेस्ट करना है अच्छे संकल्पों को, अच्छे विचारों को, कम्पलीट धारणाओं को इतना इन्वेस्ट करो, इन्वेस्ट करो कि आपकी पॉलिसी कई जन्मों तक, यहाँ तो फिक्सड बात की जाती है। हम 63 जन्म तक तो बिल्कुल सुरक्षित हैं। कहीं से भी, किसी भी तरह की कोई आंच नहीं आ सकती हमारे ऊपर। तो ऐसी ही पॉलिसी को आप सब भी अपनार्यें और जीवन सुरक्षित करें। जीवन खुशी से जीयो+जीवन में उन सारी कमियों को अपने आप पूरा करो, जिनके लिए आप आज तक तरसते रहे।



ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

सच्चाई, सफाई, ईमानदारी है। ये हमारे इतने तो परमात्मा की
कीमती इन्वेस्टमेंट हैं। जितना ज़्यादा से
ज़्यादा हम

परमानेंट एंड परफेक्ट पॉलिसी

ये जो परमानेंट संकल्पों को,
पॉलिसी है हम इसको क्यों नहीं अपना धारणाओं को

सको।

मरणोपरांत हमारे घर को, हमारे परिवार को कुछ न कुछ अच्छा अमाउंट (राशि) मिले, जिससे उनका जीवन चले। बिल्कुल सत्य है और होना भी चाहिए। क्योंकि हम सभी को कुछ तो सिव्योरिटी हो ना! तो एक है हमारे देह की सिव्योरिटी। जो हम इसको अच्छी तरह से सुरक्षित करने के लिए

सबकी डेट फिक्स होती है कि कोई दो साल की होती है, कोई तीन साल में पूरी होगी, कोई पांच साल में पूरी होगी। और कुछ न कुछ उसके इन्वेस्टमेंट का प्रीमियम है वो फिक्स कर दिया जाता है। हम सभी हर महीने कुछ न कुछ निकाल उसको भरते रहते हैं। लेकिन

अ प न
ऊपर इन्वेस्ट करते हैं
उतना ऑटोमेटिकली जमा होता जाता है।
परमात्मा का कार्य सीधा और सरल है।
इसमें कोई एजेंट नहीं बीच में, इसमें आप
खुद एजेंट हैं। हर दिन का सुबह से लेकर
शाम तक का, आप अपने-अपने एक-एक
विचार का, शुद्ध संकल्पों का एक-एक पैसा

ये जो परमानेंट पॉलिसी है हम इसको क्यों नहीं अपना रहे? इसमें सबसे पहला डर खत्म हो जाता है। समझ का सबसे पहला प्रीमियम मिला और उस प्रीमियम से हमारा डर चला गया। तो पहली पॉलिसी का पहला इन्वेस्टमेंट कितना जबरदस्त है। जिस बात का हमको डर रहता था, मरने का डर... पता चला कि हम मरते नहीं हैं सिर्फ शरीर छोड़ते हैं। तो वो जो पॉलिसी है वो शरीर की पॉलिसी है। देह खत्म होने के बाद मिलेगा। वो आपको

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन
को बदल दें



प्रश्न:- मुझे हर बार सफलता कुछ क्षण के लिए मिलती है। ऐसा मेरे साथ क्यों होता है? कृपया कुछ सुझाव दें।

उत्तर:- जीवन में ऐसा होता रहता है। आप हर चीज को एक पॉजिटिव वे में लेकर चलें और निगेटिव सोचना बंद करें। क्या होता है कि सफलता हमारे सामने ही होती है, पर जब हम निगेटिव सोच लेते हैं, तो उसे अपने से दूर कर देते हैं। तो आप ऐसा न करें!

प्रश्न- मैं जो सोचता हूँ वो मैं नहीं कर पाता हूँ। मैं अपने विचार अच्छे बनाकर खुद को एक अट्रेक्टिव सोल बनाना चाहता हूँ। मैं अपना आत्मविश्वास कैसे बढ़ाऊँ, अपने डर को कैसे दूर करूँ ताकि मुझे हर चीज़ में सफलता मिले? कृपया मेरा मार्ग दर्शन करें।

उत्तर:- सबसे पहली बात यह है कि आप बाबा को अपने साथ रखें। जब हम बाबा की श्रीमत पर चलते हैं तो हमें डर नहीं लगता है। आपको बाबा की श्रीमत पर चलकर अपने आपको नींद बनाना होगा, डर को किनारे करना होगा। अगर आपका हाथ बाबा के हाथ में होगा, तो आपको सफलता भी जरूर मिलेगी। आप जब भी कोई कार्य करें तो बाबा को साथ लेकर ही करें। आप परमात्म विश्वास को बढ़ाइए, आत्मविश्वास अपने आप बढ़ जाएगा! फिर आप एक अच्छी आत्मा भी बनेंगे, सफल भी हो जाएंगे, आपका आत्मविश्वास भी बढ़ जाएगा, आपको कोई डर भी नहीं रहेगा और आप सुरक्षित अनुभव करेंगे। फिर आपके सब कार्य भी सहज हो जायेंगे।

प्रश्न:- अगर हमारा कोई संकल्प है जो हम चाहते हैं कि पूरा हो जाए, तो उसे कितना समय लगता है?

उत्तर:- सबसे पहले हमें ये देखना होगा कि हमारे उस संकल्प के पीछे का इन्टेंशन क्या है। क्योंकि उस संकल्प के पीछे का इन्टेंशन ही हमें सिद्धि दिलाता है। अगर गौर कर उसे देखें कि उस संकल्प के पीछे हमारा मकसद क्या है, तो उसके ऊपर निर्भर करता है कि हमें कितना टाइम लगेगा। पॉजिटिव संकल्पों को सिद्ध होने में ज्यादा समय लगता है क्योंकि आज चारों तरफ नैगेटिविटी है। पॉजिटिव संकल्पों को सफल बनाने के लिए हमारा आत्मविश्वास शक्तिशाली होना चाहिए और बाबा

के प्रति हमारा निश्चय अटूट होना चाहिए। अगर ऐसा होगा तो हमारे संकल्प जरूर सिद्ध होंगे।

प्रश्न:- जब मैं ज्ञान में आया था, तब मैंने ज्योतिषी से अपनी जन्म कुंडली बनवायी थी, उसमें जो-जो लिखा है, सब वही हो रहा है। कुछ बातें ऐसी हैं जो मेरे लिए सही नहीं है। तो मैं ऐसा क्या करूं जो वो सब बातें पॉजिटिव में बदल जायें?

उत्तर:- सबसे बड़ा ज्योतिषी आपके साथ है, वह है बाबा। जिसने आपको पूरे विश्व ड्रामा का इतिहास,

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य



भूगोल बता दिया। जिसने आप आत्मा का सारा आदि-मध्य-अन्त बता दिया। तो आपके इस जन्म की जो भविष्यवाणी उन्होंने की है, उस पर अगर आप ध्यान देना बंद कर देंगे और बाबा ने आपकी जन्म कुंडली बताई है, इतने जन्मों का रहस्य बताया है, तो आप स्वदर्शन चक्रधारी बनकर रोज स्वदर्शन चक्र घुमाया करें। सतयुग से लेकर कलयुग अंत और संगम का एक चक्र रोज, हर दिन 5 बार तो जरूर घुमा लिया करें। तो आपको जो भी भविष्यवाणी सुनने में आयी है, वह सब पॉजिटिव में बदल जायेगा।

प्रश्न:- मेरा सवाल ये है कि घर में मैं और मेरा पति ही रहते हैं। पति की थोड़ी मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने से मैं सेंटर पर नहीं जा सकती। पति को अकेले नहीं छोड़कर जा सकती और साथ भी लेकर नहीं जा सकती। कृपया मेरी समस्या का समाधान कीजिए?

उत्तर:- अगर आपकी समस्या ऐसी है, तो बीच में किसी भी समय आप जाकर, अपने आपको चाहे आधे घंटे के लिए चार्ज कर सकते हैं। इस तरह से अगर नहीं भी होता तो अपने घर में ही एक ऐसा माहौल बना दीजिए। और बाबा को अपने साथ

रखिये। घर में किसी एक स्थान पर बाबा का कमरा बनाइये और उसी को सेंटर समझ लीजिये। और बीच-बीच में अपने आपको चार्ज करने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर के लिए जा भी सकते हैं।

प्रश्न:- हमारे सकाश से क्या किसी और आत्मा के विकर्म विनाश हो सकते हैं?

उत्तर:- हमारा साकाश देना उनको ऐसी अनुभूति कराएगा जिससे उनको परमात्म अनुभूति होने लगेगी और वह आत्मा परमात्मा की याद में जाएगी। साकाश किसी को ताकत देगा लेकिन विकर्म नहीं कराएगा। हमारे द्वारा दिया गया साकाश किसी को दुआएं दे सकता है। पर दुआओं से विकर्म विनाश नहीं होते हैं। विकर्म विनाश हरेक आत्मा को स्वयं ही करने पड़ते हैं। हम किसी के विकर्म विनाश नहीं कर सकते। हम जब किसी को साकाश देते हैं तो बाबा के साथ कम्बाइन्ड होकर देते हैं। ऐसा करके हम उस आत्मा को आगे बढ़ाने के लिए मदद करते हैं। बाबा के साथ उसकी बुद्धि लग जाए, इसके लिए साकाश देते हैं। बाकी अपने विकर्म तो हरेक आत्मा को स्वयं ही विनाश करने होते हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल



तपस्वी जीवन की प्रतिज्ञा

आप जानते होंगे, पुराने ज़माने में कोई कार्य करना होता था तो ब्राह्मण लोग प्रतिज्ञा करवाते थे, चाहे हथियाला बांधते थे या जल लेकर संकल्प करवाते थे। लेकिन हमें मन में दृढ़ संकल्प करना है, प्रतिज्ञा करनी है। क्या प्रतिज्ञा करें? सबसे पहली प्रतिज्ञा यह है कि मैं अलबेलापन नहीं आने दूंगा। जीवन का यह (अलबेलापन) बहुत बड़ा दुश्मन है। इसको छोटा मत समझो, यह तो बहुत बड़ा धोखेबाज है। पाँच विकार भी इससे ही आते हैं। यह आपको बाबा का नाफरमानबरदार बच्चा, कुपुत्र, कुपात्र बनायेगा। इसको छोटा मत समझो, यह भगवान की आज्ञा का उल्लंघन कराने वाला है। जो भगवान की आज्ञाओं का उल्लंघन करता है उसका भगवान से सम्बंध ही टूट जाता है। सम्बंध टूट गया माना खत्म, ऊँ शान्ति।

पहले-पहले यह प्रतिज्ञा करो कि किसी भी परिस्थिति में मैं श्रीमत का उल्लंघन नहीं करूंगा। आलस्य बहुत मीठे रूप में आता है जैसे, आज बारिश है, क्लास में नहीं जा सकता, आज सर्दी है, मेरे कान ठण्डे हो रहे हैं, नाक ठण्डा हो रहा है, कल जाऊंगा, कल डबल योग करूंगा। नहीं, अगर कोई अड़चन आती है तो उसके लिए कोई साधन तैयार करो, उसके लिए अपने नियमों को छोड़ो नहीं। आज इस रूप में आयेगा तो कल दूसरे रूप में आयेगा। इसलिए टालने का, चलाने का यह अलबेलापन जीवन में न आये, इसकी प्रतिज्ञा करो।

दूसरी प्रतिज्ञा है, आलस्य नहीं करना। मान लो, सुबह अमृतवेले योग करते हैं, योग में हल्का-सा आलस्य आता है तो योग करने के बदले नमाज़ पढ़ना शुरू करेंगे। बाबा कहते हैं, आलस्य छठा विकार है। योग में अलर्ट होकर, चुस्त होकर बैठो। आप योग में हैं माना माया के साथ युद्धस्थल में हैं। अगर सिपाही हैं सरहद पर, दुश्मनों की गोली चल रही है और वे सोये हैं तो क्या हाल होगा? अगर पहरेदार ही सोये पड़े हैं तो रक्षा कौन करेगा?

बैठे हैं योग में। योग में हमें बाबा से सर्व शक्तियाँ लेकर सारे संसार को, तत्वों को पावन करना है, हमारी इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी है और हम झुटके खा रहे हैं! हम यह ध्यान रखें या प्रतिज्ञा करें कि जीवन में सुस्ती या आलस्य आने नहीं देंगे।

तीसरी प्रतिज्ञा करनी है किसी भी प्रकार की अशुद्धि न आये। कौन-सी अशुद्धि? पहली है- बुद्धि की अशुद्धि। जितना-जितना हम योग करते जायेंगे, ज्ञान धारण करेंगे, बुद्धि पत्थर से पारस बनती जायेगी। इसमें रत्न भरते जायेंगे। बुद्धि दिव्य बनती जायेगी, विशाल



बनती जायेगी, उसमें बल भरता जायेगा। सांसारिक ज्ञान बुद्धि को मैला करता है, खराब करता है। ईश्वरीय ज्ञान बुद्धि को शुद्ध करता है। बुद्धि को खराब करने वाली बातें कौन-सी हैं? एक है संशय, फिर है सांसारिक ज्ञान, नॉवेल आदि। दूसरी है मन की अशुद्धि। इसमें दृष्टि-वृत्ति भी आ जाती है। तीसरी है, तन की अशुद्धि। जैसे मल विसर्जन करते हो तो स्नान करो, स्वच्छ वस्त्र पहनो। अपने बिस्तर और रहने-करने के स्थान को साफ रखो। आपका तपस्वी जीवन है, वहाँ का वातावरण भी ऐसा हो। चौथी है, भोजन की अशुद्धि। शुद्ध और सात्विक भोजन के बारे में तो आप जानते ही

हैं। पाँचवी है, अध्ययन की अशुद्धि। कोई ऐसा साहित्य नहीं पढ़ो जिससे मन भ्रमित हो। छठी है, संग की अशुद्धि। कभी कुसंग न करो। सत्संग, सुसंग करो।

सातवीं धन की अशुद्धि। कमाई भी अच्छे काम से होनी चाहिए। गलत काम से होने वाली कमाई भी गलत होती है, अशुद्ध होती है। किसी को झूठ बोलकर, किसी को धोखा देकर, किसी का शोषण कर, किसी का गलत काम कर होने वाली कमाई नहीं होनी चाहिए। अशुद्ध कमाई से लाया गया अन्न भी अशुद्ध होगा, तो हमारा जीवन तपस्वी कैसे होगा?

आठवीं है, वायुमण्डल की अशुद्धि। हमारा आवास-निवास, हमारा घर-कमरा शुद्ध हो। जो लोग आपका निवास देखें उनको अनुभव होना चाहिए कि इनका जीवन योगी जीवन है, तपस्वी जीवन है, इनका घर आश्रम जैसा है। घरों व कमरों में ऐसी कोई चीज़ न हो जो अशुद्ध बात को याद दिलाये। सब शुद्धि की तरफ ले जाने वाली चीज़ें हों। दीवारों पर बाबा के महावाक्य हों, अच्छे-अच्छे स्लोगन हों, ईश्वरीय ज्ञान के चित्र हों। कुल मिलाकर घर का वातावरण साफ और सुथरा हो। ये कुछ प्रकार की शुद्धियाँ हमने बतायीं, ये प्रतिज्ञा में शामिल हैं।



वैर-भरतपुर(राज.)। संगीतमय आध्यात्मिक राजयोग शिविर के दौरान भजनलाल जाटव,गृह रक्षा एवं नागरिक सुरक्षा मंत्री,राजस्थान सरकार के साथ ज्ञान चर्चा कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भावना दीदी,संचालिका,ब्रह्माकुमारीज,सादाबाद हाथरस। साथ हैं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. बबीता बहन, ब्र.कु. गीता बहन तथा अन्य।



रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। दीपावली के शुभ अवसर पर जिलाधीश कुमार पुरुषोत्तम तथा उनकी धर्मपत्नी को दीपावली की शुभकामनायें एवं भाई दूज का तिलक व प्रसाद देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. गीता बहन, समाजसेवी राजेन्द्र पोरवाल तथा अन्य।



सारंगपुर-म.प्र.। भाई दूज के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में पिछड़ा वर्ग के जिला मंत्री विष्णु पाटीदार, कृषि विस्तार अधिकारी संतोष उपाध्याय, माली समाज अध्यक्ष ओम पुष्पद, सरपंच देव प्रजापति,धनोरा, पूर्व सरपंच नंदकिशोर जी, गौशाला संचालक शिवसिंह जी, रिटा. शिक्षक प्रेमनारायण पुष्पद, पत्रकार दीपक विश्वकर्मा, स्वदीप सोलंकी आदि अतिथियों को आत्म स्मृति का तिलक लगाने एवं ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उनके साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. भाग्य लक्ष्मी बहन तथा ब्र.कु. प्रीति बहन।



हल्दवानी-रामपुर रोड(उत्तराखण्ड)। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कैडल लाइटिंग करते हुए ब्र.कु. नीलम बहन, शिवालिक स्कूल व लॉरेन्स स्कूल के मालिक अनिल जोशी, बिरला सनराइज इंश्योरेंस कंपनी के मैनेजर अशोक जोशी तथा अन्य।



कादमा-हरियाणा। श्री राम पब्लिक स्कूल कांगड़ा में आज़ादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित 'स्वैच्छक रक्तदान शिविर' में ब्र.कु. वसुधा बहन को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए खंड शिक्षा अधिकारी जलधर सिंह कलकल, हिंदुस्तान स्काउट्स एंड गाइड्स के जिला सचिव अमित जाखड़ एवं विद्यालय प्रबंधक कमेटी के सदस्य गण।



हजारीबाग-झारखण्ड। विश्व यादगार दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सड़क दुर्घटनाओं में पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् सड़क सुरक्षा नियमों को पालन करने की अपील के उद्देश्य से कैडल मार्च निकाला गया। कार्यक्रम में सदर थाना अधिकारी इंस्पेक्टर गणेश कुमार, पूर्व विधायक श्रीमति निर्मला देवी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. हर्षा दीदी तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



राँची-हरमू रोड(झारखण्ड)। दीपावली पर आयोजित लक्ष्मी नारायण एवं श्रीकृष्ण की चैतन्य झाँकी के मध्य दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से सुधा गोस्वामी, अंजली जी,पूर्व निदेशक,भूगर्भ विभाग, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. निर्मला बहन, विधायक समरी लाल,काँके तथा इंडियन नेवी के कैप्टन रंधीर पाण्डेय। कार्यक्रम में डॉ. रमेश बजाज सहित अन्य विशिष्ट लोग व ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



सादाबाद-उ.प्र.। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए हाथरस जनपद क्षेत्र के राजयोग केन्द्रों की निर्देशिका ब्र.कु. सीता दीदी, सह निर्देशिका ब्र.कु. भावना बहन, ब्र.कु. बबिता बहन,मुरसान, ब्र.कु. शोभा बहन,सासनी, समाज सेविका गीता गौड़, ब्र.कु. मिथलेश बहन, सुभाष चौधरी,गोविंदपुर, समाजसेवी सोम वर्णगेय, हीरालाल जी, ब्र.कु. राधा बहन, रामबाबू बघेल, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा अन्य भाई-बहनें।



इंदौर-प्रेमनगर। चतुर्थ राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. ए.के. जैन,प्रदेश अध्यक्ष,इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गनाइजेशन म.प्र., ब्रजेश गुप्ता,समन्वयक,इंटरनेशनल नेचुरोपैथी ऑर्गनाइजेशन म.प्र.,प्रबंधक केन्द्रीय भंडारण निगम, ब्र.कु. चंदन मेलवानी, ब्र.कु. शशि दीदी, ब्र.कु. शारदा बहन तथा ब्र.कु. यशवती बहन।



सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। सेवाकेन्द्र में आयोजित दीपावली महोत्सव कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी, डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस,लॉ एंड ऑर्डर ए.के. सिंह, राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र तथा अन्य विशिष्ट जन।

सुख-शांति के लिए पवित्रता को दें प्राथमिकता



उदयपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 25 पवित्र युगलों के सम्मान समारोह में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू ने कहा कि उदयपुर के ऐसे महान युगल धन्य हैं जिन्होंने गृहस्थ को पवित्र बनाया है। ब्रह्माकुमारी संस्थान में ऐसे लाखों पवित्र परिवारों ने अपने कर्मक्षेत्र पर रहते जीवन को पवित्र और दिव्य बनाया है। ये सिवाय परमात्म शक्ति के कोई भी कर नहीं सकता और इसी पवित्र प्रवृत्ति ही से आने वाले नवयुग का पुनः निर्माण होगा। राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम दीदी, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज,

राजस्थान सबजोन ने बताया कि समाज में जहाँ कई जगह कई तरह से नारी का अपमान हो रहा है, वहीं भगवान के घर में नर को श्री नारायण और नारी को श्री लक्ष्मी बनाने का कार्य परमात्मा ज्ञान और राजयोग के माध्यम से कर रहे हैं। महाराजकुमार लक्ष्मराज सिंह, मेवाड़ ने कहा कि इस ईश्वरीय परिवार की बहनों से मुझे निःस्वार्थ देवी स्नेह का अनुभव हुआ और इस अनुभव की ज्योति सदा मेरे जीवन को उज्ज्वल बनाये रखेगी। मेरा यह अलौकिक सम्मान अनेक युवाओं को अलौकिकता की प्रेरणा जरूर देगा। रास बिहारी शरण, महामंडलेश्वर, मेवाड़ ने

समारोह में...

25 ईश्वरीय धारणा युक्त पवित्र युगलों का हुआ सम्मान

सभी ने दिल खोलकर दीं ढेर सारी शुभकामनायें

बताया कि ब्रह्मचर्य का मतलब ही है कि अपने लक्ष्य को सदैव याद रखना। उन्होंने सभी युगलों को अपनी शुभकामनायें दीं। आयुर्वेदिक कॉलेज के प्रिंसिपल दीक्षित जी ने बताया कि जिन्होंने अपने जीवन को एक ऊँचाई प्रदान की, समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया, ऐसे पवित्र युगलों और समस्त भाई-बहनों का मैं अभिवादन करता हूँ। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा बहन ने अतिथियों का स्वागत व सम्मान किया।

‘निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं परिचर्चा’ ‘राजयोग’ स्वास्थ्य के लिए रामबाण

कोरबा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के सानिध्य में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर आंतरिक शांति अनुभूति केन्द्र, पम्प हाउस के परिसर में आयोजित ‘निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर एवं परिचर्चा’ में राजकिशोर प्रसाद, महापौर, नगर पालिका निगम कोरबा ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य व नशा मुक्ति के लिए राजयोग रामबाण है। यह सभी औषधियों के ऊपर है। मैं भी ब्रह्माकुमारीज परिवार का नियमित सदस्य हूँ और राजयोग से लाभान्वित हूँ। उन्होंने कहा कि कोरबा क्षेत्र को व्यसन मुक्त एवं खुशहाल बनाने के लिए संस्था और नगर पालिका निगम के संयुक्त प्रयास से कार्य योजना बनायेंगे, जिसे फलीभूत करने का हमारा सम्पूर्ण प्रयास रहेगा। डॉ. के.सी. देबनाथ, अक्षय हॉस्पिटल कोरबा ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विश्व में मानसिक बीमारी 90 प्रतिशत से अधिक बढ़ चुकी है, जो कि एक

ज्वलंत समस्या है। आपने कहा कि सम्पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सक और उनके द्वारा दिये गये परामर्श से भी इसका निदान सम्भव नहीं है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा

शक्तियों को जागृत कर मानसिक विकारों से मुक्ति पा सकते हैं। राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मणी बहन ने कहा कि राजयोग तन और मन दोनों को स्वस्थ रखता है।

- सभी औषधियों के ऊपर है राजयोग : महापौर
- नियमित राजयोग अभ्यास से सम्पूर्ण स्वास्थ्य : डॉ. देबनाथ
- तन और मन का स्वास्थ्य राजयोग में : ब्र.कु. रुक्मणी



सिखाये जा रहे राजयोग के नियमित अभ्यास से जीवन खुशहाल और सम्पूर्ण स्वस्थ बनता है। यह भारत की प्राचीन पद्धति और एक साधना है। जिससे हम अपनी मानसिक

दिनचर्या में यदि हम पंद्रह मिनट भी इसका अभ्यास करें तो बहुत लाभकारी होगा। मंच का संचालन शेखर राम भाई ने किया तथा राजयोग का अभ्यास ब्र.कु. बिन्दु बहन ने करवाया।

‘मेरा उत्तराखंड, व्यसनमुक्त उत्तराखंड’ अभियान के अंतर्गत किया जागरूक

श्रीनगर-गढ़वाल(उत्तराखण्ड)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित ‘मेरा उत्तराखंड, व्यसनमुक्त उत्तराखंड’ अभियान के अंतर्गत समस्त गढ़वाल ग्रामवासियों को जागरूक करने के लिए मोबाइल वैन का मोहन सिंह बिष्ट, नायब तहसीलदार, बहन एल्विन रॉक्सी, आर.टी.ओ. श्रीनगर, गिरीश पैनुली, मंडल अध्यक्ष, भाजपा, हरिओमराज चौहान, कोतवाल, दीपक तिवारी, बाजार चौकी प्रभारी, भोपाल सिंह चौधरी, अन्ना टीम के राष्ट्रीय सदस्य आदि गणमान्य अतिथियों ने बड़े ही हर्षोल्लास से हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए इस श्रेष्ठ कदम को एक अतुलनीय शुरुआत बताते



हुए बढ़-चढ़कर सराहना की एवं इसमें अपना पूरा सहयोग देने का शुभ संकल्प लिया। इस कार्यक्रम के तहत प्रोजेक्टर शो के माध्यम से नशा मुक्ति की विस्तृत जानकारी देते हुए करीब दो सौ भाई-बहनों, बच्चों एवं अतिथियों की उपस्थिति में ब्र.कु. राजीव ने बताया कि नशा एक मानसिक कमजोरी है जिसे सहज रीति से

बताया गया... तम्बाकू एक धीमा जहर है जिसमें 4000 रासायनिक द्रव्य होते हैं, जिनमें से 40 खतरनाक द्रव्यों से कैंसर रोग होते हैं। जैसे निकोटिन, कीटनाशक, कार्बन मोनोऑक्साइड, कैडमियम, आर्सेनिक, मीथेन गैस, मेथेनॉल, एसीटोन आदि

स्वयं की आंतरिक शक्तियों की अनुभूति से ठीक किया जा सकता है एवं मेडिटेशन द्वारा न केवल हम व्यसन से बच सकते हैं बल्कि समाज के रचनात्मक कार्यों में अहम भूमिका भी अदा कर सकते हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन राजयोगी ब्र.कु. मेहर चंद, नेशनल कोऑर्डिनेटर, स्पोर्ट्स विंग, ब्रह्माकुमारीज एवं उत्तराखंड प्रभारी द्वारा किया गया जिसमें सभी उत्तराखंड वासियों को राजयोगी जीवनशैली अपनाकर जीवन को खुशनुमा बनाने की प्रेरणा दी गई। अंत में राजयोगिनी ब्र.कु. नीलम बहन ने सभी को आत्म सम्मान का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ कॉमेन्ट्री द्वारा मेडिटेशन का अभ्यास करवा के इन बुराइयों से बचने की शपथ दिलवाई एवं सभी अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट कर राजयोग सीखने के लिए प्रेरित किया।

मानव को मानवता की सर्वोच्चता देना संस्थान का लक्ष्य

सैदपुर-गाजीपुर(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सैदपुर, कोल्हूवाघाट में आयोजित एक कार्यक्रम के मध्य नई शाखा के समुद्घाटन अवसर पर गाजीपुर संचालिका ब्र.कु. निर्मला दीदी ने बताया कि जीवन में आध्यात्मिक जागृति द्वारा अंतर्निहित आत्मिक शक्तियों को जागृत कर मानव को मानवता के सर्वोच्च स्वरूप तक पहुंचाना संस्था का लक्ष्य है। संस्था के पूर्वांचल क्षेत्रीय प्रबंधक ब्र.कु. दीपेन्द्र ने कहा कि मानव के अंदर से मानवता का ह्रास होना वर्तमान सामाजिक विसंगतियों और बुराइयों का मूल है। ऐसे समय में संस्था मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना द्वारा एक बेहतर विश्व की परिकल्पना को साकार करने हेतु सतत् अग्रसर है। सैदपुर ब्लॉक प्रमुख हीरालाल यादव एवं देवकली ब्लॉक प्रमुख उपेन्द्र सिंह यादव ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था विश्व भर में वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को बढ़ावा दे रही है। वैश्विक स्तर पर सम्मानित आध्यात्मिक संस्था का सैदपुर में संचालन होना हम सभी के लिए गर्व की बात है। युवा शक्ति संगठन के प्रमुख सुनील

यादव एवं सकलडीहा के वंशनारायण सिंह ने शुभकामनायें दीं। स्वागत मन्तव्य स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के पूर्व वरिष्ठ प्रबंधक सर्वजीत सिंह एवं पहाड़पुर के युवा समाजसेवी बृजेश यादव ने दिया। धन्यवाद सैदपुर की सुप्रसिद्ध समाजसेवी बहन



सीता सिंह एवं कार्यक्रम संचालन ब्र.कु. संजू बहन ने किया। मौके पर पूर्वांचल मीडिया प्रमुख ब्र.कु. विपिन, सैदपुर शाखा प्रभारी ब्र.कु. स्मिता बहन सहित ब्र.कु. संध्या बहन, ब्र.कु. गंगाधर भाई, प्रतिमा यादव तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।

कार्यशाला में सिखाई श्रेष्ठ जीवन जीने की कला

राजनांदगांव-छ.ग.। स्थानीय सेवाकेन्द्र वरदान भवन, लालबाग में पुलिस प्रशासन के सहयोग से शहर के चाकूबाजी के 26 पूर्व आरोपियों एवं उनके परिवार वालों के लिए व्यसनमुक्ति एवं श्रेष्ठ जीवन जीने की कला हेतु आयोजित कार्यशाला में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा बहन ने कहा कि श्रेष्ठ व सद्चरित्र जीवन से स्वयं व परिवार के जीवन में सुख-शांति रहती है। इसके लिए जीवन में अध्यात्म का समावेश हो। श्रेष्ठ संकल्प कराते हुए उन्होंने सभी को बहुत सहज व सरल राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। ब्र.कु. प्रभा बहन ने मंच संचालन करते हुए कहा कि नारी शक्ति द्वारा



संचालित विश्व की यह एकमात्र संस्था है जो विश्व बंधुत्व, विश्व शांति और सर्व के सहयोग से सुखमय संसार के लिए सतत् कार्यरत है। संस्था से जुड़े लाखों भाई-बहनों राजयोग की साधना से व्यसनों से मुक्त हैं। राजयोगी ब्र.कु. झालम भाई ने भारत की महान संस्कृति और परंपरा की याद दिलाते हुए संस्कारवान व चरित्रवान

बनने का आह्वान किया। नगर पुलिस अधीक्षक लोकेश देवांगन ने कहा कि जीवन के लिए अच्छी बातें सुनकर सचमुच हृदय परिवर्तन होगा ऐसा मुझे विश्वास है और ब्रह्माकुमारी संस्थान को ऐसे आयोजन के लिए बधाई देता हूँ। साइबर सेल के प्रभारी सहायक उपनिरीक्षक द्वारिका प्रसाद लाउत्रे ने कार्यक्रम के लिए धन्यवाद देते हुए आभार प्रदर्शित किया। मौके पर बसंतपुर थाना प्रभारी आशीर्वाद रहटगावकर, चिखली पुलिस चौकी प्रभारी चेतन चंद्राकर, लालबाग थाना प्रभारी कृष्णकुमार बघेल सहित संस्थान के अनेक भाई-बहनों उपस्थित रहे।